

CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2026 with Solution PDF-Set 2/4/2

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)



निर्धारित समय: 3 Hours

अधिकतम अंक: 80

सामान्य निर्देश

- (i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 12 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
- (ii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
- (iii) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1. सबकी पीड़ा के साथ व्यथा अपने मन की जो जोड़ सके,
मुड़ सके जहाँ तक समय, उसे निर्दिष्ट दिशा में मोड़ सके।
युगपुरुष वही सारे समाज का विहित धर्मगुरु होता है,
सबके मन का जो अंधकार अपने प्रकाश से धोता है।
थे जहाँ सहस्रों वर्ष पूर्व, लगता है वहीं खड़े हैं हम,
है वृथा वर्ग उन गुफावासियों से कुछ बहुत बड़े हैं हम।
अनगढ़ पत्थर से लड़ो, लड़ो किटकिटा नखों से, दाँतों से
या लड़ो ऋक्ष के रोमगुच्छ-पूरित वज्रीकृत हाथों से।
या चढ़ विमान पर नर्म मुट्टियों से गोलों की वृष्टि करो
आ जाय लक्ष्य में जो कोई, निष्ठुर हो सबके प्राण हरो।
ये तो साधन के भेद, किन्तु भावों में तत्त्व नया क्या है ?
क्या खुली प्रेम आँख अधिक ? भीतर कुछ बढ़ी दया क्या है ?
झर गई पूँछ, रोमान्त झरे, पशुता का झरना बाकी है,
बाहर-बाहर तन सँवर चुका, मन अभी सँवरना बाकी है।

[8 अंक]

1(i). कवि को ऐसा क्यों लगता है कि हम सहस्रों वर्ष पूर्व जहाँ थे, आज भी वहीं हैं ?

[1 अंक]

- (A) धरती के भीतर का रहस्य जानना अभी भी बाकी है।
(B) मानव के भीतर पशुता अभी भी शेष है।
(C) आज भी मनुष्य अपने नाखूनों का बढ़ना नहीं रोक पाया है।
(D) आज भी मनुष्य नख-दंत अवलम्बी है।

सही उत्तर: (B) मानव के भीतर पशुता अभी भी शेष है।

हल:

अवधारणा:

- पद्यांश में बाहरी प्रगति और भीतरी मानवीय विकास का अंतर समझना आवश्यक है।
- उत्तर का आधार कवि का कथन है कि पशुता का झरना अभी बाकी है।

चरण 1: निर्णायक पंक्ति पहचानें कवि कहता है कि पूँछ और शरीर के रोम झड़ गए, पर पशुता अभी शेष है। मनुष्य ने हथियारों तथा बाहरी रूप में प्रगति की है, किंतु हिंसा और निर्दयता से उसका मन मुक्त नहीं हुआ है। इसी नैतिक स्थिति के कारण कवि उसे पुराने स्थान पर खड़ा मानता है।

चरण 2: विकल्पों की जाँच करें (B) भीतर बची पशुता को स्पष्ट करता है। (A) धरती के रहस्य की बात पद्यांश में नहीं है। (C) नाखून बढ़ने का शारीरिक तथ्य कवि की चिंता नहीं है। (D) भी गलत है, क्योंकि आधुनिक मनुष्य विमान और गोलों से लड़ता है; वह केवल नख-दंत पर निर्भर नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (B) है : मानव के भीतर पशुता अभी भी शेष है।

त्वरित सुझाव: ऐसे प्रश्न में शारीरिक बदलाव और नैतिक बदलाव को अलग करके अंतिम पंक्तियों से कारण चुनें।

1(ii). 'ये तो साधन के भेद' – पंक्ति में 'साधन' से आशय है :

[1 अंक]

- (A) जीवनयापन के साधन
 - (B) लक्ष्य प्राप्ति के अस्त्र-शस्त्र
 - (C) जीविकोपार्जन के माध्यम
 - (D) शत्रु को भयभीत करने के तरीके
- सही उत्तर:** (B) लक्ष्य प्राप्ति के अस्त्र-शस्त्र

हल:

अवधारणा:

- शब्द का अर्थ उसके आसपास दिए उदाहरणों से निश्चित होता है।
- यहाँ पत्थर, नख-दंत, कठोर हाथ और विमान से बरसाए गए गोले युद्ध के साधन हैं।

चरण 1: साधनों का प्रसंग देखें कवि पुराने मनुष्य के पत्थर तथा नख-दंत से लड़ने की तुलना आधुनिक मनुष्य के विमान से गोले बरसाने से करता है। दोनों स्थितियों में दूसरों के प्राण लिए जाते हैं। इसलिए साधन उन हथियारों को कहते हैं जिनसे आक्रमण का लक्ष्य पूरा किया जाता है।

चरण 2: अन्य अर्थ अलग करें (B) लक्ष्य प्राप्ति के अस्त्र-शस्त्र इस प्रसंग का उपयुक्त अर्थ है। (A) और (C) जीवन चलाने या रोज़गार कमाने के माध्यम बताते हैं, जिनकी यहाँ चर्चा नहीं है। (D) केवल भयभीत करने तक सीमित है, जबकि कवि वास्तविक युद्ध और प्राण लेने का वर्णन करता है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (B) है : लक्ष्य प्राप्ति के अस्त्र-शस्त्र।

त्वरित सुझाव: साधन का अर्थ अनुमान से न लें; उससे पहले आए पत्थर, नख-दंत और गोले जैसे उदाहरण पढ़ें।

1(iii). 'बाहर-बाहर तन सँवर चुका' – से क्या अभिप्राय है ?

[1 अंक]

- (A) सौंदर्य प्रसाधनों से शारीरिक सुंदरता का बढ़ जाना
 - (B) शरीर के अनावश्यक अंगों का झड़ जाना
 - (C) मनुष्य की शारीरिक बनावट का सुंदर हो जाना
 - (D) मनुष्य और पशुओं के बीच अंतर दृष्टिगत होना
- सही उत्तर:** (C) मनुष्य की शारीरिक बनावट का सुंदर हो जाना

हल:

अवधारणा:

- तन सँवरने का अर्थ बाहरी शारीरिक रूप का विकसित और सुंदर होना है।
- तन और मन का विरोध बाहरी विकास तथा आंतरिक संस्कार का अंतर दिखाता है।

चरण 1: पंक्ति का व्यापक भाव समझें पूँछ और रोएँ झड़ने का उल्लेख करके कवि बताता है कि मनुष्य का शरीर विकसित होकर सुंदर बन चुका है। बाहर-बाहर शब्द इस प्रगति की सीमा स्पष्ट करता है। यह सुधार शरीर में है; प्रेम, दया और अहिंसा से मन का परिष्कार अभी पूरा नहीं हुआ।

चरण 2: विकल्पों का मिलान करें (C) शारीरिक बनावट के सुंदर होने का व्यापक अर्थ देता है। (A) में सौंदर्य प्रसाधनों की बात जोड़ी गई है, जो पद्यांश में नहीं है। (B) केवल अंगों के झड़ने के उदाहरण तक सीमित है। (D) मनुष्य-पशु का दृश्य अंतर बताता है, पर तन सँवरने का सीधा आशय नहीं बताता।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (C) है : मनुष्य की शारीरिक बनावट का सुंदर हो जाना।

त्वरित सुझाव: भावार्थ चुनते समय किसी एक उदाहरण के बजाय पूरी पंक्ति का व्यापक अर्थ व्यक्त करने वाला विकल्प लें।

1(iv). 'भावों में तत्त्व नया क्या है' – पंक्ति में निहित व्यंग्य स्पष्ट कीजिए।

[1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- व्यंग्य में कवि प्रगति के दावे और वास्तविक व्यवहार के अंतर को उजागर करता है।
- यहाँ साधनों का विकास हुआ है, पर हिंसक भावनाओं में सुधार नहीं हुआ।

चरण 1: पुराने और नए साधन देखें प्राचीन मनुष्य पत्थर और नख-दंत से लड़ता था, जबकि आधुनिक मनुष्य विमान और गोलों से प्राण लेता है। तकनीक बदलने से उसकी मारक शक्ति बढ़ गई है, लेकिन लक्ष्य में आए व्यक्ति के प्रति उसकी निष्ठुरता बनी हुई है।

चरण 2: व्यंग्य का आशय स्पष्ट करें कवि पूछता है कि इतने विकास के बाद मनुष्य के भावों में नया क्या आया। प्रश्न का आशय यह है कि प्रेम और दया नहीं बढ़े, इसलिए केवल नए हथियार पाकर स्वयं को अधिक सभ्य मानना खोखला गर्व है। यह कथित सभ्यता पर तीखा व्यंग्य है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि ने व्यंग्य किया है कि मनुष्य ने हिंसा के साधन बदल लिए हैं, किंतु उसके भीतर की क्रूरता नहीं बदली; प्रेम और दया के अभाव में उसकी सभ्यता अधूरी है।

त्वरित सुझाव: व्यंग्य समझाते समय प्रगति के दावे के साथ मनुष्य के वास्तविक हिंसक व्यवहार का अंतर अवश्य लिखें।

1(v). 'मन अभी सँवरना बाकी है' – कवि ने ऐसा क्यों कहा है ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मानवता की पहचान बाहरी सुंदरता से अधिक प्रेम, दया और संवेदना से होती है।
- कवि के अनुसार शरीर सँवर चुका है, किंतु मन की पशुता दूर होना बाकी है।

चरण 1: बाहरी विकास का पक्ष स्पष्ट करें मनुष्य का शरीर विकसित और सुंदर हुआ है। उसने पुराने पत्थरों तथा नख-दंत के स्थान पर विमान और शक्तिशाली हथियार बना लिए हैं। इस प्रकार उसने रूप और भौतिक साधनों में बड़ी उन्नति की है। फिर भी केवल बाहरी बदलाव उसे सच्चे अर्थ में मानवीय नहीं बना देता।

चरण 2: मन के अधूरे विकास का कारण समझें उसमें हिंसा, निर्दयता और दूसरों के प्राण लेने की प्रवृत्ति अभी मौजूद है। कवि के प्रश्न कि प्रेम की आँख कितनी खुली और भीतर दया कितनी बढ़ी, इसी कमी की ओर संकेत करते हैं। मन सँवरने का अर्थ है दूसरों की पीड़ा को अपनी पीड़ा समझना तथा करुणा से व्यवहार करना। जब तक यह परिवर्तन नहीं होगा, सभ्यता का नैतिक विकास अधूरा रहेगा।

चरण 3: निष्कर्ष कवि ने ऐसा इसलिए कहा है कि मनुष्य ने शरीर और साधनों को तो विकसित कर लिया है, पर मन की हिंसा तथा पशुता दूर नहीं की है। प्रेम, दया और सहानुभूति विकसित करके ही उसका मन सँवर सकता है।

त्वरित सुझाव: कारण लिखते समय पहले बाहरी प्रगति बताएँ, फिर प्रेम-दया की कमी दिखाकर मानसिक परिष्कार का अर्थ स्पष्ट करें।

1(vi). वज्रीकृत हाथों से या नर्म मुट्टियों से लड़ना कवि की दृष्टि में एक समान क्यों है ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कर्म की नैतिक प्रकृति उसके उपकरण से नहीं, उसके उद्देश्य और भाव से तय होती है।
- कवि ने दोनों प्रकार की लड़ाई में निहित निष्ठुरता को समान माना है।

चरण 1: दोनों स्थितियों का अंतर पहचानें वज्रीकृत हाथ कठोर और शक्तिशाली हाथों से सीधे आक्रमण करने की स्थिति बताते हैं। नर्म मुठ्ठियों से विमान पर बैठकर गोले बरसाना तकनीकी सहायता से की गई लड़ाई है। पहले में शारीरिक शक्ति अधिक दिखाई देती है और दूसरे में यंत्रों की शक्ति, पर यह अंतर युद्ध के साधनों का है।

चरण 2: समान भाव को स्पष्ट करें दोनों स्थितियों में आक्रमणकारी दूसरे के प्राण लेने को तैयार है। लक्ष्य में आए किसी भी व्यक्ति को निष्ठुर होकर मार देना दया और प्रेम के अभाव को दिखाता है। इसलिए केवल हाथों के नरम पड़ जाने या उपकरण बदल जाने से मनुष्य की हिंसक वृत्ति सभ्य नहीं हो जाती। कवि साधन की नवीनता के बजाय भीतर की करुणा को मानवीय प्रगति की कसौटी बनाता है।

चरण 3: निष्कर्ष दोनों प्रकार की लड़ाई एक समान हैं, क्योंकि उनमें हिंसा और प्राणहरण की निष्ठुर भावना समान है। अंतर केवल साधनों का है; प्रेम और दया के बिना आधुनिक युद्ध भी पुरानी पशुता का ही रूप है।

त्वरित सुझाव: तुलना का उत्तर देते समय उपकरणों का अंतर एक वाक्य में और दोनों में समान हिंसक भावना स्पष्ट रूप से लिखें।

2. मानव के संवाद करने, जानकारी प्राप्त करने और बाह्य दुनिया के समक्ष स्वयं को अभिनीत करने की शैली में परिवर्तन लाकर सोशल मीडिया आधुनिक युग का सर्वव्यापी पहलू बन गया है। इसने सूचना के प्रसार को अत्यंत त्वरित बना दिया है और यह सभी आयु समूहों के लिए एक आसान माध्यम बन चुका है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म जैसे फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम, लिंकडइन, यूट्यूब, आदि उपयोगकर्ता को अपनी रचनात्मकता प्रदर्शित करने और सामाजिक तौर पर सक्रिय रहने का अवसर प्रदान करते हैं। इसका महत्त्व समय के साथ बढ़ता ही जा रहा है। यह न केवल व्यक्तिगत जीवन के लिए एक प्रभावी माध्यम है, बल्कि यह शिक्षा, व्यापार और यहाँ तक कि राजनीति में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसने सूचना के प्रसार को अत्यधिक तेज़ और सस्ता बना दिया है। इसके जरिए लोग घटनाओं का सीधा प्रसारण विश्व के किसी भी कोने से देख सकते हैं। इसके अतिरिक्त शिक्षा के क्षेत्र में तो इसने एक क्रांति सी ला दी है। छात्रों के लिए यह किसी वरदान से कम नहीं है। व्यावसायिक गतिविधियाँ-जैसे उत्पादों और सेवाओं का प्रचार करना, ग्राहकों से जुड़ना, विपणन अभियानों को तेज़ी से फैलाने में भी यह मदद करता है।

सोशल मीडिया जहाँ सकारात्मक भूमिका अदा कर रहा है वहीं समाज पर इसका दुष्प्रभाव भी देखने को मिल रहा है। लोग तनाव और अवसाद से प्रभावित हो रहे हैं, अकेलापन बढ़ रहा है, अनिद्रा की समस्या बढ़ रही है। इसने आत्ममुग्धता को बढ़ाया है। अपनी निजी ज़िंदगी के बारे में लिखना, अपनी आत्मीय तस्वीरें शेयर करना, चौबीसों घंटे सोशल मीडिया पर उपस्थित रहना बेचैनी को बढ़ा सकता है। आपको याद रखना चाहिए कि इस मंच पर आने वाले आपके आभासी मित्र, सच्चे मित्र या हितैषी नहीं होते। लोग आपकी उपस्थिति का लाभ उठाकर आपको धोखा-धड़ी का शिकार बना लेते हैं। 'लाइक' और 'कमेंट' की अपेक्षा हमारे मस्तिष्क की लय बिगाड़ देते हैं। वैज्ञानिक इसकी लत को खराब जीवन-शैली से होने वाली बीमारियों में सबसे ऊपर रखते हैं।

यद्यपि यह लोगों से जुड़ने, सूचना के प्रचार-प्रसार, समुदाय में अहम भूमिका निभा रहा है लेकिन इसके अति प्रयोग से बचना चाहिए।

[10 अंक]

2(i). निम्नलिखित में से सोशल मीडिया का प्रकार नहीं है :

[1 अंक]

- (A) इंस्टाग्राम
- (B) व्हाट्सएप
- (C) ट्विटर
- (D) फेसबुक

सही उत्तर: वर्तमान शब्दों में कोई निर्विवाद विकल्प नहीं; गद्यांश में अनुलिखित मंच पूछने पर (B) व्हाट्सएप अपेक्षित है।

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में स्पष्ट रूप से उल्लिखित मंच और किसी मंच की वास्तविक श्रेणी अलग बातें हैं।
- फेसबुक, ट्विटर और इंस्टाग्राम उदाहरण के रूप में दिए गए हैं; सूची में आदि शब्द भी है।

चरण 1: गद्यांश की सूची का मिलान करें गद्यांश में फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम, लिंकडइन और यूट्यूब के नाम दिए गए हैं। विकल्प (A),

(C) और (D) के नाम इस सूची में मिलते हैं। (B) व्हाट्सऐप का नाम इस सूची में नहीं है; इसलिए केवल नामोल्लेख के आधार पर अपेक्षित चयन (B) बनता है।

चरण 2: प्रश्न की सीमा स्पष्ट करें प्रश्न यह नहीं पूछता कि किसका उल्लेख गद्यांश में नहीं है; वह पूछता है कि कौन सोशल मीडिया का प्रकार नहीं है। गद्यांश व्हाट्सऐप को इस श्रेणी से बाहर नहीं बताता और आदि शब्द से सूची को खुला रखता है। इसलिए दिए गए पाठ के आधार पर किसी मंच को सोशल मीडिया से बाहर घोषित करना संभव नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष प्रश्न के वर्तमान शब्दों में कोई निर्विवाद सही विकल्प नहीं है। यदि आशय गद्यांश में उल्लिखित नहीं होने से है, तो अपेक्षित विकल्प (B) व्हाट्सऐप है।

त्वरित सुझाव: नहीं वाले प्रश्न में देखें कि नाम का उल्लेख न होना पूछा गया है या उस माध्यम की श्रेणी में न होना।

2(ii). सोशल मीडिया की लोकप्रियता का नकारात्मक प्रभाव है :

[1 अंक]

- (A) सूचनाओं का त्वरित प्रसारण
- (B) दुनियाभर से जुड़ने का अवसर
- (C) आत्ममोह की संस्कृति को बढ़ावा
- (D) व्यावसायिक गतिविधियों में योगदान

सही उत्तर: (C) आत्ममोह की संस्कृति को बढ़ावा

हल:

अवधारणा:

- नकारात्मक प्रभाव वह है जो व्यक्ति के मानसिक या सामाजिक जीवन पर प्रतिकूल असर डाले।
- गद्यांश आत्ममुग्धता, तनाव, अकेलेपन और अनिद्रा को दुष्प्रभावों में रखता है।

चरण 1: नकारात्मक प्रभाव पहचानें गद्यांश के दूसरे अनुच्छेद में कहा गया है कि सोशल मीडिया ने आत्ममुग्धता को बढ़ाया है। अपनी निजी ज़िंदगी और तस्वीरें लगातार प्रस्तुत करना तथा लाइक-कमेंट की अपेक्षा में रहना इसी आत्मकेंद्रित प्रवृत्ति से जुड़ा है। अतः आत्ममोह की संस्कृति नकारात्मक प्रभाव है।

चरण 2: बाकी विकल्पों का परीक्षण करें (A) सूचना का त्वरित प्रसारण, (B) दुनिया भर से जुड़ने का अवसर और (D) व्यावसायिक गतिविधियों में योगदान पहले अनुच्छेद में उपयोगिता के रूप में आए हैं। ये सकारात्मक पक्ष हैं। (C) का आत्ममोह दूसरे अनुच्छेद के दुष्प्रभाव से सीधा मेल खाता है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (C) है : आत्ममोह की संस्कृति को बढ़ावा।

त्वरित सुझाव: प्रभाव वाले प्रश्न में लाभ और हानि की दो सूचियाँ मन में बनाएँ; आत्ममुग्धता को दुष्प्रभाव वाली सूची में रखें।

2(iii). निम्नलिखित कथन तथा कारण को ध्यानपूर्वक पढ़कर उचित विकल्प का चयन कर लिखिए :

कथन : सोशल मीडिया का महत्त्व समय के साथ बढ़ता ही जा रहा है।

कारण : सामाजिक संरचना के सुदृढ़ीकरण और रचनात्मक क्षमता के प्रदर्शन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

विकल्प :

[1 अंक]

- (A) कथन तथा कारण दोनों गलत हैं।
(B) कारण सही है, किंतु कथन गलत है।
(C) कथन सही है, किंतु कारण, कथन की सही व्याख्या नहीं करता है।
(D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

सही उत्तर: (D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

हल:

अवधारणा:

- कथन और कारण के प्रश्न में दोनों की सत्यता तथा उनके बीच व्याख्यात्मक संबंध की अलग-अलग जाँच की जाती है।
- निर्णय गद्यांश में बताए गए सामाजिक संपर्क, रचनात्मकता और बढ़ते उपयोग के आधार पर करना है।

चरण 1: कथन की जाँच गद्यांश में स्पष्ट है कि सोशल मीडिया का महत्त्व समय के साथ बढ़ रहा है। शिक्षा, व्यापार और राजनीति में उसकी उपयोगिता का विस्तार भी बताया गया है। इसलिए कथन सही है।

चरण 2: कारण की जाँच सोशल मीडिया लोगों को आपस में जोड़ता है, उन्हें सामाजिक रूप से सक्रिय रहने और अपनी रचनात्मकता दिखाने का अवसर देता है। समुदाय में उसकी भूमिका भी स्वीकार की गई है। अतः कारण सही है।

चरण 3: व्याख्यात्मक संबंध और विकल्प लोगों से जुड़ने तथा रचनात्मक क्षमता प्रदर्शित करने की उपयोगिता उसके बढ़ते महत्त्व का कारण है। इसलिए कारण कथन की सही व्याख्या करता है। (A) दोनों को गलत और (B) कथन को गलत बताता है; दोनों असंगत हैं। (C) सही व्याख्यात्मक संबंध को नकारता है।

चरण 4: निष्कर्ष कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है। अतः सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: पहले कथन और कारण को अलग-अलग सत्यापित करें; फिर देखें कि कारण बढ़ते महत्त्व की वजह बताता है या नहीं।

2(iv). सोशल मीडिया से क्या अभिप्राय है ?

[1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- किसी माध्यम का अभिप्राय बताते समय उसकी मुख्य गतिविधि और उपयोग का संक्षिप्त परिचय दिया जाता है।
- उत्तर में गद्यांश के संवाद, सूचना के प्रसार और रचनात्मक अभिव्यक्ति संबंधी संकेतों का उपयोग करना चाहिए।

चरण 1: मुख्य विशेषता पहचानना गद्यांश सोशल मीडिया को ऐसा माध्यम बताता है जिसने लोगों के संवाद करने और जानकारी प्राप्त करने के ढंग को बदल दिया है। इससे लोग सामाजिक रूप से सक्रिय रहकर दूसरों से जुड़ पाते हैं।

चरण 2: अभिप्राय स्पष्ट करना फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम आदि ऐसे मंच हैं जहाँ उपयोगकर्ता अपनी जानकारी और रचनात्मक सामग्री साझा कर सकते हैं। इसलिए सोशल मीडिया का अर्थ केवल समाचार सुनना नहीं, बल्कि लोगों से जुड़कर संवाद और सामग्री का आदान-प्रदान करना भी है।

चरण 3: निष्कर्ष सोशल मीडिया से अभिप्राय ऐसे ऑनलाइन सामाजिक मंचों से है जिनके माध्यम से लोग आपस में संवाद करते हैं, सूचनाएँ साझा करते हैं और अपनी रचनात्मकता प्रदर्शित करते हैं।

त्वरित सुझाव: अभिप्राय पूछे जाने पर मंचों की सूची भर न दें; संवाद और सूचना साझा करने का मुख्य कार्य अवश्य बताएँ।

2(v). सोशल मीडिया के दो सकारात्मक पहलुओं का उल्लेख कीजिए।

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश से सकारात्मक पक्ष चुनते समय लाभकारी कार्यों को दुष्प्रभावों से अलग करना चाहिए।
- दो पहलू माँगे जाने पर दो स्पष्ट और अलग लाभ लिखना पर्याप्त है; प्रत्येक का आशय भी स्पष्ट होना चाहिए।

चरण 1: सूचना के प्रसार का लाभ गद्यांश के अनुसार सोशल मीडिया ने सूचना का प्रसार अत्यंत त्वरित और सस्ता बना दिया है। लोग विश्व के किसी भी कोने की घटनाओं का सीधा प्रसारण देख सकते हैं। इससे जानकारी प्राप्त करना सरल और व्यापक हो गया है। यह पहला सकारात्मक पहलू है।

चरण 2: रचनात्मकता और सामाजिक संपर्क का लाभ फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम जैसे मंच लोगों को अपनी रचनात्मकता प्रदर्शित करने तथा सामाजिक तौर पर सक्रिय रहने का अवसर देते हैं। उपयोगकर्ता दूसरों से जुड़कर अपने विचार और रचनात्मक सामग्री साझा कर सकते हैं। यह सूचना की गति से अलग, अभिव्यक्ति और संपर्क का दूसरा लाभ है।

चरण 3: उत्तर को प्रश्न तक सीमित रखना प्रश्न दो सकारात्मक पहलुओं का है। इसलिए तनाव, अनिद्रा और अकेलेपन जैसे दुष्प्रभाव यहाँ उत्तर का हिस्सा नहीं बनेंगे। शिक्षा और व्यापार की उपयोगिता भी गद्यांश में है, किंतु चुने गए दो लाभों को स्पष्ट करके उत्तर पूरा किया जा सकता है।

चरण 4: निष्कर्ष सोशल मीडिया के दो सकारात्मक पहलू हैं : (1) सूचना का तेज़ और सस्ता प्रसार, जिससे दूर-दराज की घटनाओं की जानकारी मिलती है। (2) रचनात्मकता प्रदर्शित करने और लोगों से जुड़कर सामाजिक रूप से सक्रिय रहने का अवसर।

त्वरित सुझाव: दो लाभों को अलग क्रम में लिखें और हर लाभ के साथ गद्यांश का एक स्पष्ट समर्थन जोड़ें।

2(vi). सोशल मीडिया पर 'लाइक' और 'कमेंट' की अपेक्षा हमारे मस्तिष्क की लय बिगाड़ देते हैं। कैसे ? स्पष्ट कीजिए।

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- किसी कथन को स्पष्ट करने के लिए उसके कारण और परिणाम के बीच संबंध समझाना चाहिए।
- यहाँ उत्तर का आधार गद्यांश में वर्णित प्रतिक्रिया की अपेक्षा, लगातार उपस्थिति, बेचैनी तथा तनाव है।

चरण 1: प्रतिक्रिया की अपेक्षा समझना व्यक्ति अपनी निजी जानकारी और तस्वीरें साझा करके दूसरों से लाइक और कमेंट की अपेक्षा करने लगता है। उसका ध्यान बार-बार इस बात पर जाता है कि उसकी पोस्ट पर कैसी और कितनी प्रतिक्रिया आई। इस प्रकार उसकी मानसिक व्यस्तता बाहरी प्रतिक्रियाओं से जुड़ जाती है।

चरण 2: बेचैनी और तनाव से संबंध जोड़ना प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा उसे लगातार सोशल मीडिया पर उपस्थित रहने के लिए प्रेरित करती है। गद्यांश ऐसी चौबीसों घंटे की उपस्थिति को बेचैनी बढ़ाने वाला बताता है। अपेक्षा के अनुसार प्रतिक्रिया न मिलने की चिंता मानसिक शांति को प्रभावित करती है और तनाव की स्थिति पैदा कर सकती है।

चरण 3: मस्तिष्क की लय बिगड़ने का आशय यहाँ मस्तिष्क की लय बिगड़ने का आशय मानसिक संतुलन और स्वाभाविक शांति के बाधित होने से है। लगातार अपेक्षा और बेचैनी ध्यान को अस्थिर करते हैं। गद्यांश में अनिद्रा और अवसाद जैसे दुष्प्रभाव भी इसी अस्वस्थ उपयोग के संदर्भ में दिए गए हैं।

चरण 4: निष्कर्ष लाइक और कमेंट की अपेक्षा व्यक्ति को प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा में लगातार सोशल मीडिया से जोड़े रखती है। इससे बेचैनी, तनाव और मानसिक अशांति बढ़ती है; उसकी स्वाभाविक मानसिक लय और एकाग्रता प्रभावित होती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में अपेक्षा, लगातार उपस्थिति और बेचैनी की कड़ी समझाएँ; केवल नुकसान गिनाकर बात अधूरी न छोड़ें।

2(vii). सोशल मीडिया की लत का खराब जीवन-शैली से होने वाली बीमारियों से क्या संबंध है ? तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए।

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- तर्कपूर्ण उत्तर में दिए गए निष्कर्ष को गद्यांश के ठोस कारणों और प्रभावों से जोड़ना चाहिए।
- सोशल मीडिया के उपयोग और उसकी लत में अंतर है; प्रश्न अत्यधिक तथा लगातार उपयोग के दुष्प्रभावों पर केंद्रित है।

चरण 1: लत का व्यवहारिक रूप पहचानना गद्यांश में चौबीसों घंटे सोशल मीडिया पर उपस्थित रहने, निजी जीवन की बातें और तस्वीरें साझा करने तथा लाइक और कमेंट की अपेक्षा का उल्लेख है। जब इन गतिविधियों में अत्यधिक संलग्नता हो जाए और व्यक्ति बार-बार इन्हीं में लगा रहे, तो यह आदत असंतुलित जीवन-शैली का रूप लेने लगती है।

चरण 2: स्वास्थ्य पर प्रभाव स्पष्ट करना लगातार उपस्थिति से बेचैनी बढ़ सकती है। गद्यांश सोशल मीडिया के दुष्प्रभावों में तनाव, अवसाद, अकेलेपन और अनिद्रा का उल्लेख करता है। नींद और मानसिक शांति का प्रभावित होना बताता है कि यह लत सामान्य जीवन की स्वस्थ लय को बाधित करती है। इसलिए इसका संबंध केवल समय के उपयोग से नहीं, स्वास्थ्य से भी है।

चरण 3: तर्क और निष्कर्ष का संबंध इन्हीं दुष्प्रभावों के कारण वैज्ञानिक इसकी लत को खराब जीवन-शैली से होने वाली बीमारियों में सबसे ऊपर रखते हैं। गद्यांश उपयोगिता को स्वीकार करते हुए अति प्रयोग से बचने की बात कहता है। अतः दोष हर प्रकार के उपयोग में नहीं, उस पर अत्यधिक निर्भरता और असंतुलित आदत में है।

चरण 4: निष्कर्ष सोशल मीडिया की लत व्यक्ति को लगातार ऑनलाइन रखकर उसकी नींद और मानसिक शांति प्रभावित करती है। इससे तनाव, अवसाद, अकेलापन और अनिद्रा बढ़ते हैं। इसलिए यह खराब जीवन-शैली से जुड़ी बीमारियों का कारण बनने वाली अस्वस्थ आदत है; इसके अति प्रयोग से बचना आवश्यक है।

त्वरित सुझाव: जीवन-शैली से संबंध दिखाने के लिए लगातार उपयोग को नींद और मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभावों से जोड़ें।

3(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए :

यद्यपि फ्रीचर लेखन का कोई निश्चित फ़ॉर्मूला नहीं होता फिर भी एक अच्छे फ्रीचर लेखन हेतु ध्यान रखने योग्य किन्हीं चार बातों का उल्लेख कीजिए।

[4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फ्रीचर किसी विषय को तथ्यात्मक आधार पर रोचक, संवेदनशील और रचनात्मक ढंग से प्रस्तुत करता है। उसमें मानवीय अनुभव और लेखक की प्रस्तुति का विशेष महत्त्व होता है।
- विषय का चयन, प्रामाणिक सामग्री, आकर्षक आरंभ और सहज भाषा अच्छे फ्रीचर के प्रमुख आधार हैं। निश्चित फ़ॉर्मूला न होने का अर्थ तथ्यों या संगठन की उपेक्षा करना नहीं है।

चरण 1: उत्तर के चार बिंदु चुनना प्रश्न चार ध्यान रखने योग्य बातें पूछता है। इसलिए विषय की प्रासंगिकता, सामग्री की विश्वसनीयता, प्रस्तुति का आकर्षण और भाषा की सहजता को अलग-अलग स्पष्ट करना चाहिए। शीर्षक तथा आरंभ को प्रस्तुति के अंतर्गत रखा जा सकता है। फ्रीचर में कल्पनाशील भाषा का प्रयोग किया जा सकता है, किंतु किसी व्यक्ति की कही हुई बात या घटना को मनमाने ढंग से गढ़ना उचित नहीं है। इस प्रकार बिंदुओं में दोहराव नहीं होगा और फ्रीचर की विषयवस्तु तथा शैली दोनों सामने आएंगी।

चरण 2: लगभग 80 शब्दों में आदर्श उत्तर अच्छे फ्रीचर लेखन में चार बातों का ध्यान रखना चाहिए। पहला, विषय रोचक, प्रासंगिक और पाठकों के जीवन से जुड़ा हो। दूसरा, सामग्री पर्याप्त खोजबीन, साक्षात्कार और प्रत्यक्ष अनुभव से जुटाई जाए तथा तथ्यों की प्रामाणिकता जाँची जाए। तीसरा, शीर्षक आकर्षक और आरंभ जिज्ञासा जगाने वाला हो; विवरण में तारतम्य तथा मानवीय पक्ष बना रहे। चौथा, भाषा सरल, सहज, चित्रात्मक और प्रभावपूर्ण हो। अनावश्यक विस्तार, कठिन शब्दों तथा उपदेशात्मक शैली से बचते हुए अंत ऐसा हो जो पाठक पर प्रभाव छोड़े।

चरण 3: निष्कर्ष प्रासंगिक विषय, प्रमाणित तथ्य, आकर्षक प्रस्तुति और सहज प्रभावपूर्ण भाषा अच्छे फ्रीचर की चार प्रमुख विशेषताएँ

हैं।

त्वरित सुझाव: चार बातें पूछे जाने पर चार स्पष्ट आधार चुनें और प्रत्येक के साथ उसका संक्षिप्त आशय भी लिखें।

3(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए :

आपके विद्यालय में 'विश्व पर्यावरण दिवस' के अवसर पर 'वृक्षारोपण' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर वहाँ आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों का ब्यौरा देते हुए स्थानीय समाचार पत्र में प्रकाशन हेतु देने के लिए सुरभि/सौरभ की ओर से एक रिपोर्ट तैयार कीजिए।

[4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समाचार पत्र के लिए रिपोर्ट में आयोजन का स्थान, समय, उद्देश्य और प्रमुख गतिविधियाँ संक्षेप में दी जाती हैं। शीर्षक, संवाददाता का नाम तथा स्थान और तिथि इसे प्रकाशन योग्य स्वरूप देते हैं।
- रिपोर्ट की भाषा तथ्यप्रधान, स्पष्ट और तटस्थ होती है। गतिविधियों का क्रमबद्ध विवरण लिखा जाता है; निजी भावनाओं या अतिशयोक्तिपूर्ण प्रशंसा से बचना चाहिए।

चरण 1: प्रारूप और सामग्री की योजना सबसे पहले वृक्षारोपण तथा पर्यावरण संरक्षण को व्यक्त करता हुआ शीर्षक दें। उसके नीचे सुरभि का नाम, स्थान और तिथि लिखें। विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून को आयोजित कार्यक्रम के विवरण में जागरूकता रैली, भाषण, पोस्टर प्रदर्शनी, पौधे लगाना और उनकी देखभाल का संकल्प शामिल करें। यह एक आदर्श रिपोर्ट है, अतः विद्यालय तथा स्थान के लिए उपयुक्त उदाहरण लिया गया है। मुख्य विवरण लगभग 80 शब्दों में रखें और गतिविधियों को भूतकाल में प्रस्तुत करें।

चरण 2: प्रकाशन हेतु आदर्श रिपोर्ट वृक्षारोपण के साथ मनाया विश्व पर्यावरण दिवस

सुरभि, संवाददाता

नई दिल्ली, 5 जून।

आदर्श विद्यालय में विश्व पर्यावरण दिवस पर वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ प्रधानाचार्य ने पौधा लगाकर किया। विद्यार्थियों ने पर्यावरण संरक्षण के संदेशों के साथ जागरूकता रैली निकाली। भाषण प्रतियोगिता और पोस्टर प्रदर्शनी द्वारा पेड़ों का महत्त्व बताया गया। शिक्षकों तथा विद्यार्थियों ने विद्यालय परिसर में नीम, पीपल और अमलतास के पौधे लगाए। बागवानी शिक्षक ने पौधों की देखभाल के उपाय समझाए। प्रत्येक कक्षा ने पौधों की नियमित सिंचाई और सुरक्षा की जिम्मेदारी ली। कार्यक्रम का समापन पर्यावरण संरक्षण की शपथ के साथ हुआ।

चरण 3: निष्कर्ष रिपोर्ट में शीर्षक, संवाददाता, स्थान और तिथि सहित कार्यक्रम की प्रमुख गतिविधियाँ तथा पौधों की देखभाल का संकल्प स्पष्ट किया गया है।

त्वरित सुझाव: रिपोर्ट में क्या, कहाँ, कब और कैसे के उत्तर दें; आयोजन का विवरण लिखें, उसके स्थान पर व्यक्तिगत अनुभव न लिखें।

3(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए :

कहानी का नाट्य रूपांतरण करते समय पात्रों के मनोभावों या मानसिक द्वंद्व के दृश्यों का प्रदर्शन/मंचन किस प्रकार किया जाता है ? उदाहरण सहित लिखिए।

[4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कहानी में कथावाचक पात्र के मन की बात सीधे बता सकता है, पर नाटक में वही बात दर्शकों तक मंच पर सुनाई या दिखाई देने वाले साधनों से पहुँचानी होती है।

- स्वगत कथन, संवाद, मुखमुद्रा, आंगिक अभिनय और उपयुक्त ध्वनि-प्रकाश पात्र के भीतर चल रहे संघर्ष को व्यक्त करने के साधन हैं।

चरण 1: अंतर्मन को मंचीय क्रिया में बदलना रूपांतरण में पहले यह पहचानते हैं कि पात्र किस निर्णय, भावना या विरोधी इच्छा से जूझ रहा है। फिर कथावाचक के विवरण को स्वगत कथन अथवा किसी दूसरे पात्र के साथ संवाद में बदलते हैं। मौन, हिचकिचाहट, चाल और चेहरे के भाव संवाद को अर्थ देते हैं। मंच-निर्देश इन क्रियाओं को स्पष्ट करते हैं; केवल लंबा वर्णन पढ़ देना पर्याप्त नहीं होता। दर्शक पात्र की उलझन उसके व्यवहार से समझें, इसलिए संवाद और हावभाव में तालमेल होना चाहिए। उदाहरण के पात्र का एक कदम आगे बढ़ना और फिर लौट आना उसके निर्णय न कर पाने को दृश्य रूप दे सकता है।

चरण 2: उदाहरण सहित लगभग 80 शब्दों का उत्तर कहानी का नाट्य रूपांतरण करते समय पात्रों के मनोभावों और मानसिक द्वंद्व को स्वगत कथन, संवाद, मुखमुद्राओं तथा आंगिक अभिनय द्वारा व्यक्त किया जाता है। आवश्यकतानुसार ध्वनि और प्रकाश भी वातावरण बनाते हैं। उदाहरणतः सत्य बोलने और मित्र को बचाने के बीच उलझा पात्र अकेले में अपने आपसे प्रश्न कर सकता है। उसका बार-बार रुकना, बेचैनी से टहलना और काँपता स्वर भी अंतर्द्वंद्व प्रकट करेंगे। इस प्रकार कथाकार द्वारा वर्णित आंतरिक भाव मंच पर दृश्य और श्रव्य अनुभव बन जाते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष पात्र के अंतर्मन को स्वगत, संवाद और अभिनय से मंच पर प्रत्यक्ष किया जाता है; उपयुक्त ध्वनि-प्रकाश उसकी अभिव्यक्ति को प्रभावी बनाते हैं।

त्वरित सुझाव: मन के संघर्ष का एक स्पष्ट उदाहरण देकर बताइए कि अभिनेता उसे बोलने और अभिनय करने से कैसे दर्शाएगा।

4(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

पत्रकारीय लेखन का सबसे जाना-माना रूप क्या है ? इसके लिए समाचार लेखन की शैली का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पत्रकारीय लेखन का सर्वाधिक परिचित रूप समाचार लेखन है; इसका उद्देश्य घटना के महत्वपूर्ण तथ्यों को स्पष्ट और वस्तुनिष्ठ ढंग से बताना है।
- उल्टा पिरामिड शैली में सूचना का क्रम समय के अनुसार नहीं, उसके महत्व के घटते क्रम में तय होता है।

चरण 1: शैली का क्रम समझना समाचार की शुरुआत में मुख्य घटना और सबसे आवश्यक तथ्य दिए जाते हैं। इसे मुखड़ा या इंट्रो कहते हैं। उसके बाद संबंधित विवरण, पृष्ठभूमि तथा अन्य कम महत्वपूर्ण सूचनाएँ आती हैं। इससे पाठक आरंभ में ही मूल बात जान लेता है और संपादन के समय अंतिम अंश हटाने पर भी समाचार का मुख्य अर्थ सुरक्षित रहता है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों का उत्तर पत्रकारीय लेखन का सबसे जाना-माना रूप समाचार लेखन है। इसमें उल्टा पिरामिड शैली अपनाई जाती है। सबसे महत्वपूर्ण तथ्य पहले, फिर उनका विस्तार और अंत में अपेक्षाकृत कम महत्वपूर्ण जानकारी दी जाती है। आरंभिक अनुच्छेद को मुखड़ा कहते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष समाचार लेखन में उल्टा पिरामिड शैली के अनुसार सर्वाधिक आवश्यक सूचना पहले तथा शेष विवरण महत्व के घटते क्रम में रखे जाते हैं।

त्वरित सुझाव: पहले समाचार लेखन का नाम लिखें, फिर मुख्य तथ्य से गौण विवरण तक का क्रम बताएँ।

4(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

वे कौन-सी सुविधाएँ हैं जो मुद्रित माध्यमों के पाठकों को उपलब्ध हैं लेकिन रेडियो के श्रोताओं को नहीं ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मुद्रित सामग्री पाठक के सामने स्थायी रूप से उपलब्ध रहती है। पाठक अपनी सुविधा से उसे पढ़ने का समय और गति चुन सकता है।
- रेडियो श्रव्य माध्यम है। सामान्य प्रसारण में वाक्य सुनने के बाद आगे बढ़ जाता है; श्रोता उसे मुद्रित पंक्ति की तरह आँखों के सामने रखकर नहीं पढ़ सकता।

चरण 1: पढ़ने और सुनने की सुविधाओं में अंतर समाचारपत्र का पाठक कठिन अंश पर रुक सकता है, पिछले वाक्य पर लौट सकता है और सामग्री सँभालकर बाद में फिर पढ़ सकता है। वह शीर्षक, चित्र और तालिका जैसी दृश्य सामग्री भी देखता है। सामान्य रेडियो प्रसारण में सुनने का क्रम और गति प्रसारण तय करता है, इसलिए छूटी बात तत्काल दोहराकर सुनना संभव नहीं होता। यह तुलना सामान्य प्रसारण की है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों का उत्तर मुद्रित माध्यम के पाठक अपनी गति से पढ़ सकते हैं, कठिन अंश दोबारा पढ़ सकते हैं और सामग्री सुरक्षित रखकर बाद में देख सकते हैं। चित्र तथा तालिकाएँ भी उनके सामने होती हैं। रेडियो के सामान्य प्रसारण में श्रोता को ये सुविधाएँ नहीं मिलतीं।

चरण 3: निष्कर्ष पुनर्पाठ, अपनी गति से अध्ययन, सामग्री का संरक्षण और दृश्य जानकारी मुद्रित माध्यम की प्रमुख सुविधाएँ हैं, जो सामान्य रेडियो प्रसारण में उपलब्ध नहीं होतीं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पुनर्पाठ और अपनी गति से पढ़ने की सुविधा अवश्य बताएँ; इन्हीं से रेडियो का अंतर स्पष्ट होता है।

4(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

पिछले कुछ वर्षों में आर्थिक पत्रकारिता के महत्त्व के बढ़ने का कारण स्पष्ट कीजिए।

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आर्थिक पत्रकारिता अर्थव्यवस्था, बाजार, रोजगार और व्यावसायिक गतिविधियों की जानकारी देती है।
- उत्तर में आर्थिक बदलावों को आम नागरिक की बढ़ती सूचना संबंधी जरूरतों से जोड़ना चाहिए।

चरण 1: कारण को पहचानिए पिछले वर्षों में उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण से आर्थिक गतिविधियों का विस्तार हुआ है। बाजार, उद्योग और निवेश से जुड़े फैसले अब अधिक लोगों के जीवन को प्रभावित करते हैं। इसलिए आर्थिक घटनाओं को समझना केवल विशेषज्ञों की जरूरत नहीं रह गया है।

चरण 2: संक्षिप्त उत्तर उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण से बाजार तथा व्यापार का विस्तार हुआ है। रोजगार, बचत, निवेश, महँगाई और शेयर बाजार में आम लोगों की रुचि बढ़ी है। इनके बारे में विश्वसनीय जानकारी की बढ़ती आवश्यकता ने आर्थिक पत्रकारिता का महत्त्व बढ़ाया है।

चरण 3: निष्कर्ष आर्थिक गतिविधियों के विस्तार तथा आम नागरिक की आर्थिक जानकारी की बढ़ती आवश्यकता के कारण आर्थिक पत्रकारिता का महत्त्व बढ़ा है।

त्वरित सुझाव: केवल व्यापार का उल्लेख न करें; महँगाई, रोजगार और निवेश को जनजीवन से जोड़कर कारण स्पष्ट करें।

4(iv). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

कहानी के संवादों को नाट्य रूपांतरण करते समय किस तरह प्रभावशाली बनाया जा सकता है ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- नाटक में संवाद पात्रों के स्वभाव, संबंधों और संघर्ष को प्रकट करते हुए कथानक आगे बढ़ाते हैं।
- मंच पर संवाद बोलने और सुनने योग्य होने चाहिए; हावभाव तथा अभिनय उनकी अभिव्यक्ति को सहारा देते हैं।

चरण 1: संवादों की आवश्यकता समझिए कहानी में कथावाचक विवरण देकर पात्र का मनोभाव समझा सकता है। नाटक में वही बात पात्रों के संवाद और अभिनय से सामने आती है। इसलिए लंबे वर्णन को ज्यों का त्यों बोलवाने से संवाद बोझिल होते हैं; उन्हें स्थिति और पात्र के अनुरूप ढालना चाहिए।

चरण 2: संक्षिप्त उत्तर नाट्य रूपांतरण में संवाद संक्षिप्त, सहज, बोलचाल के तथा पात्रों की उम्र, स्वभाव और सामाजिक परिवेश के अनुकूल होने चाहिए। लंबे विवरणों को सार्थक बातचीत में बदलकर, उचित विराम, हावभाव और स्वर के उतार-चढ़ाव से संवादों को प्रभावशाली बनाया जा सकता है।

चरण 3: निष्कर्ष पात्रानुकूल भाषा, संक्षिप्तता, स्वाभाविक बातचीत और अभिनय की अनुकूलता संवादों को मंच पर प्रभावशाली बनाती है।

त्वरित सुझाव: हर संवाद पर जाँचें कि वह पात्र को खोलता है या कथानक को आगे बढ़ाता है; अनावश्यक विवरण हटाएँ।

4(v). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

विचार करने और उसे व्यक्त करने की प्रक्रिया निबंध लेखन के परंपरागत विषयों में क्यों घटित नहीं हो पाती ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेखन में लेखक अपने अनुभवों और विचारों को स्वयं व्यवस्थित करके अभिव्यक्त करता है।
- पहले से तैयार सामग्री पर निर्भरता स्वतंत्र चिंतन तथा नई अभिव्यक्ति के अभ्यास को सीमित करती है।

चरण 1: परंपरागत विषयों की समस्या समझिए परंपरागत निबंधों के परिचित विषयों पर पुस्तकें और तैयार नमूने आसानी से मिल जाते हैं। विद्यार्थी प्रायः उन्हीं की भूमिका, तर्क और निष्कर्ष याद कर लेते हैं। ऐसी निर्भरता में विषय को नए ढंग से देखने तथा अपनी बात खोजने का अवसर कम हो जाता है।

चरण 2: संक्षिप्त उत्तर परंपरागत निबंध विषयों पर पहले से तैयार सामग्री उपलब्ध रहती है। विद्यार्थी प्रायः उसे रटकर दोहरा देते हैं। वे अपने अनुभवों से नए विचार खोजने और उन्हें अपनी भाषा में व्यक्त करने का अभ्यास नहीं करते; इसलिए मौलिक चिंतन और अभिव्यक्ति की प्रक्रिया बाधित होती है।

चरण 3: निष्कर्ष रटी हुई सामग्री को दोहराने की प्रवृत्ति के कारण परंपरागत निबंध विषयों में स्वतंत्र चिंतन और मौलिक अभिव्यक्ति विकसित नहीं हो पाती।

त्वरित सुझाव: उत्तर का केंद्र विषयों की परिचितता नहीं, तैयार सामग्री पर निर्भरता से रुकने वाली मौलिक विचार प्रक्रिया रखें।

5(i). निम्नलिखित दिए गए विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :

दीपावली में घर की साज-सज्जा

[6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में अनुभव, कल्पना और संवेदना के माध्यम से दिए गए विषय को सजीव बनाया जाता है। भाषा सहज, चित्रात्मक और विषय पर केंद्रित होनी चाहिए।
- लगभग 120 शब्दों के लेख में उपयुक्त शीर्षक, स्वाभाविक आरंभ, क्रमबद्ध विस्तार और प्रभावी समापन आवश्यक हैं। रूपरेखा के बाद दिया गया नमूना लेख उत्तर का मुख्य भाग है।

चरण 1: विषय की रूपरेखा लेख की शुरुआत दीपावली से पहले घर में होने वाली तैयारी से करें। फिर सफाई, रंगोली, दीयों तथा फूलों से सजावट का सजीव वर्णन दें। अंत में परिवार की सहभागिता और पर्यावरण के प्रति सजगता से उत्सव का अर्थ स्पष्ट करें। वर्णन में रंग, प्रकाश और सुगंध का उपयोग करें, ताकि पाठक के सामने घर का दृश्य उभर आए।

चरण 2: भाषा और प्रस्तुति की योजना शीर्षक के बाद लेख को एक संगठित अनुच्छेद में प्रस्तुत करें। छोटे और स्पष्ट वाक्यों से दृश्य को आगे बढ़ाएँ। विवरणों को केवल सूची की तरह न रखें, बल्कि अपने अनुभव और भावों से जोड़ें। अंत में ऐसी पंक्ति लिखें जो पूरे वर्णन का भाव समेटे। नीचे के नमूने में यही क्रम अपनाया गया है।

चरण 3: पूर्ण नमूना लेख दीपावली में घर की साज-सज्जा

दीपावली आने से पहले ही हमारे घर में उत्साह की लहर दौड़ जाती है। अलमारियों की सफाई होती है और पुरानी वस्तुएँ जरूरतमंदों को दे दी जाती हैं। माँ दरवाजे पर गंदे के फूलों का तोरण बाँधती हैं। मैं बहन के साथ आँगन में रंगोली बनाता हूँ। रंगों के बीच रखे छोटे दीये ऐसे लगते हैं, मानो धरती पर तारे उतर आए हों। शाम होते ही खिड़कियों और मुंडेरों पर मिट्टी के दीये जगमगा उठते हैं। रसोई से आती मिठाइयों की सुगंध पूरे घर को महका देती है। हम प्लास्टिक की सजावट से बचते हैं और बिजली भी सोचकर खर्च करते हैं। सबके सहयोग से सजा घर केवल सुंदर नहीं दिखता, उसमें अपनापन भी चमकता है। यही उजाला दीपावली को मेरे लिए विशेष बनाता है।

चरण 4: निष्कर्ष साज-सज्जा के दृश्य के साथ परिवार का अपनापन और पर्यावरण के अनुकूल विकल्प जोड़ने से लेख विषयानुकूल तथा प्रभावशाली बनता है।

त्वरित सुझाव: रंगोली, तोरण और दीयों के तीन सजीव दृश्य चुनें तथा अंत में पारिवारिक आत्मीयता से उन्हें जोड़ें।

5(ii). निम्नलिखित दिए गए विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :

उस दिन जब अचानक धरती काँपने लगी

[6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में अनुभव, कल्पना और संवेदना के माध्यम से दिए गए विषय को सजीव बनाया जाता है। भाषा सहज, चित्रात्मक और विषय पर केंद्रित होनी चाहिए।
- लगभग 120 शब्दों के लेख में उपयुक्त शीर्षक, स्वाभाविक आरंभ, क्रमबद्ध विस्तार और प्रभावी समापन आवश्यक हैं। रूपरेखा के बाद दिया गया नमूना लेख उत्तर का मुख्य भाग है।

चरण 1: घटना का क्रम और भाव आरंभ में रोजमर्रा की शांत स्थिति दिखाएँ। इसके बाद धरती के अचानक काँपने का अनुभव, आसपास की प्रतिक्रिया और सुरक्षित स्थान तक पहुँचने का वर्णन दें। अंत में भय से उबरकर सहायता और सजगता का संदेश रखें। प्रथम पुरुष में लिखने से अनुभव की आत्मीयता बनी रहती है; घटनाएँ समय के क्रम में आएँ और अनावश्यक विस्तार से बचें।

चरण 2: भाषा और प्रस्तुति की योजना शीर्षक के बाद लेख को एक संगठित अनुच्छेद में प्रस्तुत करें। छोटे और स्पष्ट वाक्यों से दृश्य को आगे बढ़ाएँ। विवरणों को केवल सूची की तरह न रखें, बल्कि अपने अनुभव और भावों से जोड़ें। अंत में ऐसी पंक्ति लिखें जो पूरे वर्णन का भाव समेटे। नीचे के नमूने में यही क्रम अपनाया गया है।

चरण 3: पूर्ण नमूना लेख उस दिन जब अचानक धरती काँपने लगी

उस दिन मैं अपने कमरे में पढ़ रहा था। अचानक मेज पर रखा गिलास हिलने लगा और खिड़कियाँ खड़खड़ा उठीं। पहले लगा कि चक्कर आ रहा है, पर पंखे को झूलते देखकर समझ गया कि भूकंप आया है। माँ ने आवाज दी। हम खिड़कियों से दूर मजबूत मेज के नीचे झुककर बैठ गए और उसके पाए पकड़ लिए। कुछ क्षण बहुत लंबे लगे। झटके रुकने पर हम सीढ़ियों से सावधानीपूर्वक नीचे उतरे और इमारतों से दूर खुले मैदान में पहुँच गए। पड़ोसी एक बुजुर्ग को सहारा देकर लाए। कोई पानी बाँट रहा था, कोई बच्चों को ढाढ़स बँधा रहा था। धरती शांत थी, लेकिन मन काँप रहा था। उस दिन समझ आया कि संकट में धैर्य, तैयारी और एकता कितनी जरूरी है।

चरण 4: निष्कर्ष घटना का क्रमबद्ध, संवेदनशील वर्णन और अंत में अनुभव से मिली सीख इस रचनात्मक लेख को पूर्णता देते हैं।

त्वरित सुझाव: पहले सामान्य वातावरण, फिर कंपन और प्रतिक्रिया, तथा अंत में सहायता व सीख लिखें; घटना का क्रम बनाए रखें।

5(iii). निम्नलिखित दिए गए विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :

विश्वविद्यालय में प्रवेश लेने का उत्साह

[6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में व्यक्तिगत अनुभूति, कल्पना और परिवेश के सजीव चित्रण से विषय को प्रभावपूर्ण बनाया जाता है।
- विषय विश्वविद्यालय में प्रवेश का उत्साह है। इसलिए नई शुरुआत की प्रसन्नता के साथ स्वतंत्रता, जिज्ञासा और उत्तरदायित्व का अनुभव भी उभरना चाहिए।
- लगभग 120 शब्दों के लेख में उपयुक्त शीर्षक, अनुभव का क्रमबद्ध विस्तार और सार्थक समापन रखा जाता है।

चरण 1: लेख की रूपरेखा आरंभ प्रवेश मिलने के समाचार से करें। फिर परिसर, पुस्तकालय, नए मित्रों और विषयों से परिचय का दृश्य प्रस्तुत करें। भावों को केवल खुशी तक सीमित न रखें; घर से निकलते विद्यार्थी की हल्की घबराहट और बड़े सपनों को भी स्थान दें। अंत में नए अवसरों का सदुपयोग करने का संकल्प आए। इससे लेख का आरंभ, मध्य और अंत एक अनुभव की कड़ियों की तरह जुड़ेंगे।

चरण 2: प्रस्तुति और भाषा शीर्षक विषय के अनुरूप रखें और लेख प्रथम पुरुष में लिखें। सरल, चित्रात्मक भाषा पाठक को अनुभव में सहभागी बनाती है। परिसर का उल्लेख संवेदना जगाने के लिए हो, सुविधाओं की सूची बनाने के लिए नहीं। शब्दसीमा का पालन करते हुए छोटे वाक्यों तथा स्वाभाविक भावों से उत्साह व्यक्त करें। नीचे दिया गया मॉडल उत्तर लगभग 120 शब्दों में इसी रूपरेखा को मूर्त करता है।

चरण 3: पूर्ण मॉडल लेख विश्वविद्यालय में प्रवेश लेने का उत्साह

प्रवेश सूची में अपना नाम देखते ही मेरी खुशी का ठिकाना न रहा। वर्षों से जिस विश्वविद्यालय के विशाल द्वार को बाहर से देखता था, आज वह मेरा अपना था। पहले दिन परिसर में कदम रखते हुए मन में उत्साह भी था और हल्की घबराहट भी। हरे पेड़, चहलपहल और पुस्तकालय की अनगिनत किताबें मानो नए संसार का निमंत्रण दे रही थीं। नए मित्रों से परिचय हुआ तो संकोच भी दूर होने लगा। अब केवल परीक्षाएँ पास करना नहीं, अपनी रुचियों को पहचानना और विचारों को विस्तार देना था। माँ की सीख याद आई कि स्वतंत्रता के साथ जिम्मेदारी भी आती है। मैंने निश्चय किया कि इस अवसर का सदुपयोग करूँगा। सचमुच, आज सपनों की ओर मेरा नया सफर शुरू हुआ।

चरण 4: निष्कर्ष लेख में प्रवेश मिलने की प्रसन्नता, नए परिवेश का आकर्षण और भविष्य के प्रति जिम्मेदारी का भाव एक साथ व्यक्त हुआ है।

त्वरित सुझाव: प्रवेश का समाचार, परिसर का पहला अनुभव और भविष्य का संकल्प जोड़कर लगभग 120 शब्दों का सजीव लेख बनाइए।

6(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

‘उषा’ कविता में कवि ने ग्रामीण अंचल की सुबह का मनोरम वर्णन किया है। आप अपने घर के आसपास होने वाली सुबह के प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन कीजिए।

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न अपने आसपास की सुबह का वर्णन माँगता है। कविता का सार लिखने के बजाय निजी परिवेश के रंग, प्रकाश, ध्वनि और ताजगी को शब्द देना आवश्यक है।
- उषा में सुबह का सौंदर्य रंगों और ग्रामीण जीवन से जुड़े बिंबों द्वारा उभरता है। इसी संवेदनशील दृष्टि से अपने आसपास के दृश्य चुने जा सकते हैं।

चरण 1: वर्णन के लिए दृश्य चुनें प्रातःकाल के बदलते आकाश, पेड़ों पर पड़ती किरणों, घास पर ओस और पक्षियों के कलरव जैसे दृश्य विषयानुकूल हैं। सभी इंद्रियानुभवों की लंबी सूची बनाने के बजाय कुछ परस्पर जुड़े बिंब चुनें। प्रश्न में घर के आसपास की सुबह पूछी गई है, इसलिए उत्तर को अपने अनुभव की तरह प्रस्तुत करें। कविता के बिंबों की नकल या कवि के जीवन का विवरण आवश्यक नहीं है। दृश्य का क्रम अँधेरे के हटने से सूर्य की पहली किरण तक रख सकते हैं; इससे वर्णन में स्वाभाविक गति आती है।

चरण 2: लगभग 60 शब्दों का मॉडल उत्तर मेरे घर के आसपास सुबह बहुत मनोहारी होती है। पूर्व दिशा में हल्की लालिमा फैलती है और नीला आकाश धीरे-धीरे सुनहरा होने लगता है। पेड़ों की पत्तियों पर ओस की बूँदें मोतियों-सी चमकती हैं। पक्षियों का कलरव वातावरण को मधुर बना देता है। शीतल हवा फूलों की सुगंध बिखेरती है। उगते सूर्य की कोमल किरणें मन में नई स्फूर्ति भर देती हैं।

चरण 3: निष्कर्ष प्राकृतिक रंगों, ओस, पक्षियों और शीतल हवा के माध्यम से घर के आसपास की सुबह का सजीव चित्र प्रस्तुत किया गया है।

त्वरित सुझाव: सुबह के वर्णन में आकाश का रंग, कोई मधुर ध्वनि और ताजगी का एक अनुभव जोड़ें; उत्तर अपने परिवेश तक केंद्रित रखें।

6(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

‘बादल राग’ कविता के आधार पर किसानों की स्थिति का वर्णन कीजिए। कवि उनकी स्थिति के लिए किसे और क्यों उत्तरदायी मानता है ?

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बादल राग में किसान श्रमशील किंतु शोषित वर्ग का प्रतिनिधि है। उसका दुर्बल शरीर और उससे छीन लिया गया जीवनरस उसकी दयनीय दशा दिखाते हैं।
- कवि बादल को परिवर्तन और क्रांति की शक्ति से जोड़ता है। किसान की पुकार उसकी निराशा के साथ परिवर्तन की आशा भी व्यक्त करती है।

चरण 1: किसान की दशा और उसका पाठगत आधार कविता में किसान को जीर्ण बाहु और शीर्ण शरीर वाला कहकर उसके क्षीण शरीर का चित्र प्रस्तुत किया गया है। उसका सार चूस लिए जाने का संकेत बताता है कि लगातार श्रम के बाद भी उसे जीवन के लिए पर्याप्त साधन नहीं मिलते। वह बादल को अधीर होकर बुलाता है। यह पुकार केवल प्राकृतिक वर्षा की चाह नहीं, बल्कि उत्पीड़न से मुक्ति और व्यवस्था में बदलाव की आकांक्षा भी है।

चरण 2: उत्तरदायित्व का कारण समझें कवि की दृष्टि में संपन्न शोषक वर्ग किसान के श्रम का लाभ स्वयं हड़प लेता है। किसान उत्पादन करता है, पर उसका जीवन अभावग्रस्त रहता है। इसलिए उसकी दुर्दशा का कारण आलस्य या श्रम की कमी बताना अनुचित होगा। प्रश्न के दूसरे भाग में शोषक वर्ग का उल्लेख करने के साथ यह भी स्पष्ट करना चाहिए कि किसान की मेहनत का उचित फल उसे न मिलने से उसकी ऐसी दशा हुई है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों का मॉडल उत्तर बादल राग में किसान निर्धन, शोषित और दुर्बल है। उसकी बाँहें जीर्ण और शरीर क्षीण हो

गया है। कठोर परिश्रम के बावजूद उसका जीवन अभावों से भरा है। कवि उसकी दशा के लिए पूँजीपति शोषक वर्ग को उत्तरदायी मानता है, जिसने उसके श्रम का सार चूस लिया है। इसलिए किसान क्रांति के प्रतीक बादल को बुलाकर परिवर्तन और मुक्ति की आशा करता है।

चरण 4: निष्कर्ष किसान की दुर्बलता शोषण का परिणाम है; शोषक वर्ग उसके परिश्रम का लाभ हड़पता है और किसान परिवर्तन की प्रतीक्षा करता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर के दोनों भाग अवश्य लिखें: किसान की जीर्ण दशा और उसके श्रम का फल हड़पने वाले शोषक वर्ग की जिम्मेदारी।

6(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

कवि कर्म की फ़सल और कृषि कर्म की फ़सल के बीच में क्या अंतर है ? ‘छोटा मेरा खेत’ कविता के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उमाशंकर जोशी की कविता में कागज का पन्ना खेत है और उस पर रची गई कविता कवि-कर्म की फ़सल है। यह रूपक साहित्य-सृजन की प्रक्रिया समझाता है।
- कृषि की भौतिक उपज और कविता की भावात्मक उपज का अंतर उनके टिकाऊपन, उपभोग और प्रभाव से स्पष्ट होता है।

चरण 1: कृषि की फ़सल की सीमा समझें किसान खेत में बीज बोकर अन्न पैदा करता है। यह अन्न शरीर की भूख मिटाता है। कटाई के बाद उसकी मात्रा निश्चित होती है और लोगों द्वारा खाए जाने पर घटती जाती है। वह समय के साथ समाप्त हो जाता है; नई फ़सल के लिए पुनः श्रम और खेती आवश्यक हैं।

चरण 2: कवि-कर्म की विशिष्टता समझें कवि अनुभव, संवेदना और कल्पना से शब्दों की फ़सल उगाता है। पाठक उससे बार-बार आनंद पाते हैं। कविता का रस बाँटने पर घटता नहीं, बल्कि नए पाठकों और नए अर्थों के साथ फैलता है। कविता में रस का अक्षय पात्र इसी निरंतर आनंद का संकेत है; यहाँ तुलना खेती के महत्व को घटाने के लिए नहीं है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर कृषि-कर्म की फ़सल अन्न है, जो शरीर की भूख मिटाती है और उपभोग से समाप्त हो जाती है। कवि-कर्म की फ़सल कविता है, जो मन को आनंद और संवेदना देती है। उसका रस बार-बार पढ़ने और बाँटने पर भी समाप्त नहीं होता। इसलिए कवि की फ़सल क्षणिक उपज होकर भी अनंत काल तक आनंद देने वाला अक्षय भंडार बन जाती है।

चरण 4: निष्कर्ष कृषि की फ़सल भौतिक और उपभोग से क्षय होने वाली है; कवि की फ़सल रस और आनंद की अक्षय, दीर्घजीवी संपदा है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में खेत-कागज के रूपक के बाद अन्न के क्षय और काव्य-रस की अक्षयता की स्पष्ट तुलना कीजिए।

7(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

‘बात सीधी थी पर’ कविता से उद्धृत ‘भाषा के चक्कर में ज़रा टेढ़ी फँस गई’ – पंक्ति से क्या अभिप्राय है ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कुँवर नारायण की कविता सहज कथ्य को अनावश्यक भाषायी सजावट से जटिल बना देने की प्रवृत्ति पर ध्यान दिलाती है।
- भाषा का उद्देश्य भाव को स्पष्ट करना है; कृत्रिम शब्दाडंबर उसे उलझा सकता है।

चरण 1: सीधी बात और भाषायी उलझाव पहचानें कवि के पास व्यक्त करने के लिए सहज बात थी। उसे प्रभावशाली बनाने की कोशिश में उसने भाषा को अत्यधिक सजाया और घुमाया। फलस्वरूप बात की सहजता तथा स्पष्टता बाधित हुई। टेढ़ी फँसना इसी अभिव्यक्ति-संकट का संकेत है; इसका अर्थ बात का तथ्यात्मक रूप से गलत होना नहीं है। कविता भाषा की सहजता बनाए रखने का

आग्रह करती है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर इस पंक्ति का अभिप्राय है कि कवि की सहज, स्पष्ट बात अनावश्यक भाषायी सजावट और शब्दों के फेर में उलझ गई। उसे अधिक प्रभावशाली बनाने के प्रयास में उसका स्वाभाविक अर्थ दब गया और सरल भाव की अभिव्यक्ति जटिल हो गई।

चरण 3: निष्कर्ष सहज कथ्य को कृत्रिम भाषा में व्यक्त करने की कोशिश ने उसका अर्थ और संप्रेषण उलझा दिया।

त्वरित सुझाव: सीधी बात को सरल भाव और भाषा के चक्कर को अनावश्यक शब्दाडंबर से जोड़कर पंक्ति का आशय लिखिए।

7(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

‘लक्ष्मण-मूर्च्छा और राम का विलाप’ प्रसंग के राम अवतारी पुरुष न होकर एक सामान्य मानव थे, उदाहरण सहित सिद्ध कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- तुलसीदास के इस प्रसंग में राम के शोक से उनका सहज मानवीय और भ्रातृप्रेमपूर्ण रूप सामने आता है।
- उत्तर में सामान्य मानवीय भावना के साथ प्रसंग का ठोस उदाहरण देना आवश्यक है।

चरण 1: राम के मानवीय शोक का प्रमाण देखें लक्ष्मण को मूर्च्छित देखकर राम व्याकुल होकर विलाप करते हैं। वे कहते हैं कि यदि भाई से बिछोह का अनुमान होता तो पिता का वचन भी न मानते। यह दुख की तीव्रता में कही गई बात है। वे अयोध्या लौटकर सुमित्रा को क्या उत्तर देंगे, इसकी भी चिंता करते हैं। यहाँ अपने प्रियजन को खोने का भय बोलता है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर लक्ष्मण को मूर्च्छित देखकर राम सामान्य भाई की तरह रोते और व्याकुल होते हैं। वे कहते हैं कि भाई-वियोग का पता होता तो पिता का वचन भी न मानते। सुमित्रा को उत्तर देने की चिंता उनका मानवीय दुख प्रकट करती है।

चरण 3: निष्कर्ष भ्रातृ-वियोग की आशंका, विलाप और माता को उत्तर देने की चिंता राम का सामान्य मानव जैसा संवेदनशील रूप दिखाते हैं।

त्वरित सुझाव: राम की मानवता सिद्ध करते समय केवल दुख का उल्लेख न करें; लक्ष्मण-वियोग पर कही उनकी बात का उदाहरण भी दें।

7(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

‘बगुलों के पंख’ कविता के आधार पर नभ में पाँती-बँधे उड़ते बगुलों के सौंदर्य का वर्णन कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उमाशंकर जोशी ने काले बादलों और उजले बगुलों के रंग-विरोध से आकाश का मनोहारी दृश्य रचा है।
- दृश्य की गतिशीलता, रंगों की छटा और कवि पर उसका प्रभाव मिलकर सौंदर्य स्पष्ट करते हैं।

चरण 1: दृश्य के मुख्य बिंदु पहचानें काले बादलों से भरे आकाश में कतार बाँधकर उड़ते बगुलों के सफेद पंख चमकते हैं। श्याम बादलों की पृष्ठभूमि उजले पंखों को और उभारती है। यह सुंदरता कवि का ध्यान इतनी प्रबलता से खींचती है कि वह स्वयं को मानो उससे बँधा अनुभव करता है और दृश्य को कुछ देर रोक लेना चाहता है। पंक्तिबद्ध उड़ान इस छवि को लय और गति प्रदान करती है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर काले बादलों से भरे आकाश में पाँती बाँधकर उड़ते बगुलों के उजले पंख अत्यंत मनोहारी लगते हैं। श्याम बादलों पर उनकी श्वेत आभा अनुपम रंग-विरोध रचती है। यह गतिशील सौंदर्य कवि की आँखें चुरा लेता है और उसे बाँध लेता है।

चरण 3: निष्कर्ष श्याम बादलों पर उजले, पंक्तिबद्ध बगुलों की उड़ान ऐसा मोहक दृश्य बनाती है कि कवि उसमें बँध जाता है।

त्वरित सुझाव: सौंदर्य-वर्णन में श्याम बादल, श्वेत पंख और कवि पर पड़े सम्मोहक प्रभाव को एक साथ जोड़िए।

8. हो जाए न पथ में रात कहीं,
 मंज़िल भी तो है दूर नहीं –
 यह सोच थका दिन का पंथी भी जल्दी-जल्दी चलता है !
 दिन जल्दी-जल्दी ढलता है !
 बच्चे प्रत्याशा में होंगे,
 नीड़ों से झाँक रहे होंगे –
 यह ध्यान परो में चिड़ियों के भरता कितनी चंचलता है !
 दिन जल्दी-जल्दी ढलता है !
 मुझसे मिलने को कौन विकल ?
 मैं होऊँ किसके हित चंचल ?
 यह प्रश्न शिथिल करता पद को, भरता उर में विह्वलता है !
 दिन जल्दी-जल्दी ढलता है !

[5 अंक]

8(i). बच्चों का नीड़ों से झाँकने का संभावित कारण है :

[1 अंक]

- (A) रात्रि का अंधकारयुक्त भयावह वातावरण
 (B) माता-पिता प्रदत्त स्नेह, सुरक्षा और भोजन
 (C) माता-पिता का सुबह से नीड़ों से बाहर होना
 (D) नीड़ और आसपास के वातावरण में पसरा सन्नाटा
- सही उत्तर:** (B) माता-पिता प्रदत्त स्नेह, सुरक्षा और भोजन

हल:

अवधारणा:

- प्रत्याशा का अर्थ आशापूर्वक प्रतीक्षा करना है। बच्चे माता-पिता के लौटने की आशा में नीड़ों से झाँकते हैं।
- उत्तर का आधार दिए काव्यांश में बच्चों की प्रतीक्षा और चिड़ियों की बढ़ती चंचलता का संबंध है।

चरण 1: प्रतीक्षा का कारण समझें बच्चों की प्रत्याशा का ध्यान चिड़ियों के परो में चंचलता भरता है। बच्चे माता-पिता के लौटने पर मिलने वाले स्नेह, संरक्षण और भोजन की आशा रखते हैं। इसीलिए विकल्प (B) प्रतीक्षा के भाव को सबसे पूरा व्यक्त करता है।

चरण 2: अन्य विकल्प जाँचें (A) में भयावह अंधकार को कारण बताया गया है, जबकि बच्चों की प्रत्याशा में भय प्रमुख नहीं है। (C) केवल माता-पिता की अनुपस्थिति बताता है, प्रतीक्षा का भावात्मक और व्यावहारिक कारण नहीं। (D) का सन्नाटा भी काव्यांश में उनकी आशा का कारण नहीं बताया गया।

चरण 3: निष्कर्ष माता-पिता से मिलने वाला स्नेह, सुरक्षा और भोजन उनकी प्रतीक्षा का कारण है। सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: प्रत्याशा को भय नहीं, लौटते माता-पिता से मिलने वाले स्नेह और पोषण की आशा से जोड़िए।

8(ii). दिन ढलते ही घर की ओर लौटती चिड़िया के पंरों में चंचलता है तो कवि के कदमों में :

[1 अंक]

- (A) शिथिलता
- (B) व्याकुलता
- (C) गतिशीलता
- (D) भावुकता

सही उत्तर: (A) शिथिलता

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में चिड़ियों की चंचलता और कवि के कदमों की शिथिलता का विरोध व्यक्त हुआ है।
- उत्तर के लिए प्रश्न में उल्लिखित अंग को ध्यान से देखें: कदमों की दशा और हृदय की दशा अलग हैं।

चरण 1: कदमों की दशा का प्रमाण देखें कवि पूछता है कि उससे मिलने के लिए कौन विकल है और वह किसके लिए जल्दी करे। इसी प्रश्न का प्रभाव बताने वाली पंक्ति है: यह प्रश्न शिथिल करता पद को। पद अर्थात् कदम हैं, इसलिए उनकी दशा शिथिलता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों का भेद समझें (B) व्याकुलता कवि के अंतर्मन की बेचैनी से जुड़ सकती है, पर कदमों के लिए सटीक शब्द नहीं है। (C) गतिशीलता चिड़ियों की बढ़ती गति के अनुकूल है, कवि के धीमे पड़ते कदमों के नहीं। (D) भावुकता व्यापक भाव है, जबकि प्रश्न का प्रत्यक्ष उत्तर पंक्ति में शिथिलता है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि के कदमों में शिथिलता है। सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: पद को कदम और उर को हृदय मानकर पढ़िए; प्रश्न कदमों का है, इसलिए शिथिलता चुनिए।

8(iii). निम्नलिखित कथन तथा कारण को ध्यानपूर्वक पढ़कर उचित विकल्प का चयन कर लिखिए :

कथन : चिड़िया शीघ्रातिशीघ्र अपनी मंज़िल तक पहुँचना चाहती है।

कारण : गहराती संध्या उसे उसके बच्चों के लिए चिंतित कर रही है।

विकल्प :

[1 अंक]

- (A) कथन तथा कारण दोनों गलत हैं।
- (B) कारण सही है, लेकिन कथन गलत है।
- (C) कथन सही है, लेकिन कारण, कथन की सही व्याख्या नहीं करता है।
- (D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

सही उत्तर: (D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार पाठ का संबंधित प्रसंग और उसका केंद्रीय आशय है।
- कथन के समर्थन में स्पष्ट उदाहरण देना और उसके अर्थ का अंतर पहचानना आवश्यक है।

चरण 1: प्रसंग और आशय कथन सही है। बच्चों की प्रतीक्षा चिड़ियों को अपने नीड़ों तक शीघ्र पहुँचने के लिए प्रेरित करती है। बच्चों के नीड़ों से झाँकने का ध्यान उनके पंरों में चंचलता भरता है।

चरण 2: विचार का परीक्षण कारण भी सही है। गहराती संध्या में बच्चों की प्रतीक्षा का ध्यान उन्हें शीघ्र लौटने के लिए चिंतित करता है। यह चिंता कथन में व्यक्त शीघ्रता का कारण है।

चरण 3: उत्तर का विवेचन कारण कथन की सही व्याख्या करता है। (A) दोनों को गलत बताता है और (B) कथन को गलत बताता है;

इसलिए दोनों गलत हैं। (C) इनके बीच संबंध नकारता है, जबकि काव्यांश बच्चों की प्रतीक्षा को ही चिड़ियों की गति का आधार बताता है।

चरण 4: निष्कर्ष कथन तथा कारण दोनों सही हैं और कारण कथन की सही व्याख्या करता है। सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: कथन और कारण को अलग जाँचें; फिर बच्चों की प्रतीक्षा को चिड़ियों की शीघ्रता का कारण बताने वाली पंक्ति से उनका संबंध परखें।

8(iv). काव्यांश के मूल भाव को स्पष्ट करने वाला/वाले कथन है/हैं :

I. बीता हुआ समय लौटकर नहीं आता।

II. गतिशील समय के साथ चलते हुए लक्ष्य प्राप्ति के लिए संघर्ष करना चाहिए।

III. अपनों से मिलन की आशा हमारे प्रयासों में तीव्रता लाती है।

उचित विकल्प का चयन कर लिखिए :

[1 अंक]

(A) केवल III

(B) I और II

(C) II और III

(D) I, II और III

सही उत्तर: (C) II और III

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार पाठ का संबंधित प्रसंग और उसका केंद्रीय आशय है।
- कथन के समर्थन में स्पष्ट उदाहरण देना और उसके अर्थ का अंतर पहचानना आवश्यक है।

चरण 1: प्रसंग और आशय कथन II का आधार थके पंथी का मंज़िल समीप देखकर जल्दी चलना है। ढलते दिन के साथ वह लक्ष्य पाने का प्रयास तेज करता है। कथन III का आधार बच्चों की प्रतीक्षा के कारण चिड़ियों के परो में चंचलता भरना है।

चरण 2: विचार का परीक्षण कथन I एक सामान्य सत्य है, किंतु यहाँ बीते समय के वापस न आने की चर्चा केंद्रीय नहीं है। इसलिए I को शामिल करने वाले (B) और (D) मूल भाव के अनुकूल नहीं हैं।

चरण 3: उत्तर का विवेचन (A) केवल III को लेकर पंथी की लक्ष्याभिमुख गति को छोड़ देता है। (C) में II और III दोनों आते हैं। ये क्रमशः लक्ष्य-प्राप्ति के लिए गतिशील रहने और अपनों से मिलने की आशा से प्रयास तीव्र होने के भाव व्यक्त करते हैं।

चरण 4: निष्कर्ष कथन II और III मूल भाव को स्पष्ट करते हैं। सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: हर कथन को पंथी की लक्ष्य की ओर बढ़ती गति या चिड़ियों की मिलन-आशा वाली पंक्ति से मिलाकर मूल भाव तय करें।

8(v). 'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' – कथन की आवृत्ति संकेत करती है :

[1 अंक]

- (A) समय की गतिशीलता की ओर
- (B) काव्यांश के तुकान्त शब्दों की ओर
- (C) संध्या के आगमन की ओर
- (D) कवि की रचनात्मकता की ओर

सही उत्तर: (A) समय की गतिशीलता की ओर

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार पाठ का संबंधित प्रसंग और उसका केंद्रीय आशय है।
- कथन के समर्थन में स्पष्ट उदाहरण देना और उसके अर्थ का अंतर पहचानना आवश्यक है।

चरण 1: प्रसंग और आशय दिन के जल्दी-जल्दी ढलने की पंक्ति बार-बार आती है। पंथी की गति, चिड़ियों की चंचलता और कवि की व्याकुलता के बीच समय निरंतर बीतता रहता है। आवृत्ति इस गतिशीलता को उभारती है।

चरण 2: विचार का परीक्षण (A) समय के प्रवाह का व्यापक अर्थ व्यक्त करता है। (B) केवल तुकान्त शब्दों की बात करता है, जबकि प्रश्न आवृत्ति के आशय का है। तुक और केंद्रीय संकेत एक ही बात नहीं हैं।

चरण 3: उत्तर का विवेचन (C) में संध्या का आगमन दृश्य का एक पक्ष है, लेकिन सभी प्रसंगों में लौटती पंक्ति समय की सतत गति का संकेत देती है। (D) कवि की रचनात्मकता का सामान्य उल्लेख करता है, पंक्ति का विशिष्ट अर्थ नहीं बताता।

चरण 4: निष्कर्ष आवृत्ति समय की गतिशीलता की ओर संकेत करती है। सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: बार-बार लौटती दिन ढलने की पंक्ति को पंथी, चिड़ियों और कवि के तीनों प्रसंगों में पढ़कर समय का साझा संकेत पहचानें।

9(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

‘भक्तिन’ पाठ में वर्णित किन्हीं तीन समस्याओं का उदाहरण सहित वर्णन कीजिए।

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार पाठ का संबंधित प्रसंग और उसका केंद्रीय आशय है।
- कथन के समर्थन में स्पष्ट उदाहरण देना और उसके अर्थ का अंतर पहचानना आवश्यक है।

चरण 1: प्रसंग और आशय तीन समस्याओं को उनके उदाहरणों के साथ चुनना चाहिए। पुत्र-पुत्री के भेद में जिठानियों के पुत्रों को विशेष भोजन मिलता है और भक्तिन की बेटियाँ उपेक्षित रहती हैं। बाल-विवाह का उदाहरण भक्तिन का स्वयं पाँच वर्ष की आयु में विवाह है। विधवा-शोषण में संपत्ति पाने के उद्देश्य से पुनर्विवाह का दबाव आता है।

चरण 2: विचार का परीक्षण उत्तर में हर समस्या अलग रहे तथा उदाहरण पाठ की घटना से जुड़ा हो। ये प्रसंग दिखाते हैं कि भक्तिन का संघर्ष केवल आर्थिक नहीं है। परिवार में बेटी होने, छोटी आयु में ब्याहे जाने और विधवा हो जाने पर स्त्री की इच्छा तथा अधिकारों की उपेक्षा की जाती है।

चरण 3: उत्तर का विवेचन लगभग 60 शब्दों में उत्तर: भक्तिन में पुत्र-पुत्री का भेद दिखता है; जिठानियों के पुत्रों को अच्छा भोजन मिलता है, जबकि उसकी बेटियाँ उपेक्षित रहती हैं। बाल-विवाह का उदाहरण स्वयं भक्तिन है, जिसका विवाह पाँच वर्ष की आयु में हुआ। विधवा-शोषण भी सामने आता है; पति की मृत्यु के बाद परिवार उसकी संपत्ति पाने के लिए उस पर पुनर्विवाह का दबाव डालता है।

चरण 4: निष्कर्ष पाठ में लिंगभेद, बाल-विवाह और विधवा-शोषण की समस्याएँ भक्तिन के जीवन के ठोस उदाहरणों से उभरती हैं।

त्वरित सुझाव: तीन अलग समस्याएँ चुनें और प्रत्येक के साथ भक्तिन की एक ठोस घटना जोड़ें, जैसे पाँच वर्ष की आयु में उसका विवाह।

9(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

‘बाज़ार दर्शन’ पाठ के संदर्भ में लिखिए कि ‘पर्चेजिंग पावर’ से क्या अभिप्राय है ? क्या इसका उपयोग सकारात्मक कार्यों के लिए भी किया जा सकता है ? उदाहरण सहित लिखिए।

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार पाठ का संबंधित प्रसंग और उसका केंद्रीय आशय है।
- कथन के समर्थन में स्पष्ट उदाहरण देना और उसके अर्थ का अंतर पहचानना आवश्यक है।

चरण 1: प्रसंग और आशय पर्चेजिंग पावर का अर्थ वस्तुएँ खरीदने की आर्थिक क्षमता अर्थात् क्रयशक्ति है। पाठ में चेतावनी है कि केवल इस शक्ति के प्रदर्शन की इच्छा मनुष्य से अनावश्यक खरीद करा सकती है। खरीदने की क्षमता होने पर भी वास्तविक आवश्यकता पहचानना जरूरी है।

चरण 2: विचार का परीक्षण सकारात्मक उपयोग में अपनी वास्तविक आवश्यकताओं की पूर्ति और जरूरतमंदों के हित के लिए उपयोगी सामान खरीदना शामिल है। गरीब विद्यार्थियों के लिए पुस्तकें खरीदना इसका उदाहरण हो सकता है। यह पाठ की विवेकपूर्ण उपभोग की सीख का व्यावहारिक विस्तार है। भगत जी जरूरत भर खरीदकर इसी संयम का उदाहरण देते हैं।

चरण 3: उत्तर का विवेचन लगभग 60 शब्दों में उत्तर: पर्चेजिंग पावर का अर्थ वस्तुएँ खरीदने की आर्थिक क्षमता अर्थात् क्रयशक्ति है। केवल उसका प्रदर्शन अनावश्यक खरीद बढ़ाता है। इसका सकारात्मक उपयोग अपनी वास्तविक आवश्यकताएँ पूरी करने तथा जरूरतमंदों की सहायता में हो सकता है। उदाहरणतः गरीब विद्यार्थियों के लिए पुस्तकें खरीदना इसका सदुपयोग है। पाठ में भगत जी केवल आवश्यक वस्तु खरीदकर संयमित उपभोग की सीख देते हैं।

चरण 4: निष्कर्ष क्रयशक्ति का विवेकपूर्ण उपयोग आवश्यकता-पूर्ति और लोकहित दोनों के लिए किया जा सकता है।

त्वरित सुझाव: पहले क्रयशक्ति का अर्थ लिखें, फिर जरूरत के अनुसार खरीद और गरीब विद्यार्थियों के लिए पुस्तकें खरीदने का सकारात्मक उदाहरण दें।

9(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

‘शरीष के फूल’ पाठ में शरीष के नए और पुराने फूलों द्वारा जीवन के किस सत्य को उजागर किया गया है ?

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शरीष के माध्यम से लेखक परिवर्तन, नवीनता और जीवन की निरंतर गतिशीलता का संदेश देते हैं।
- पुराने का मोह छोड़कर नए के लिए स्थान बनाना जीवन के विकास की आवश्यक शर्त है।

चरण 1: पाठ में निहित संकेत समझिए शरीष की नई पुष्प-सृष्टि जीवन के नवीकरण को व्यक्त करती है। पाठ में पुराने कड़े फलों के देर तक चिपके रहने का उल्लेख भी है। वे तभी हटते हैं जब नए फल-पत्ते उन्हें धकेलते हैं। इस प्राकृतिक घटना से लेखक उन लोगों की जड़ता पर व्यंग्य करते हैं जो अपनी पुरानी स्थिति और अधिकार छोड़ना नहीं चाहते। यहाँ प्रश्न के नए-पुराने फूलों संबंधी संकेत को इसी व्यापक जीवन-सत्य से जोड़ना चाहिए। पुराने का उपयोग समाप्त हो जाने पर भी उससे चिपके रहने से नई पीढ़ी और नए विचारों का रास्ता रुकता है। लेखक मनुष्य को अपनी उपयोगिता पहचानकर सहज भाव से परिवर्तन स्वीकारने की सीख देते हैं।

चरण 2: लगभग 60 शब्दों में उत्तर शरीष के नए और पुराने फूल जीवन में परिवर्तन की अनिवार्यता उजागर करते हैं। समय के साथ पुराने को हटकर नए के लिए स्थान देना पड़ता है। पुराने से चिपके रहना जड़ता का संकेत है; नवीनता स्वीकारना विकास का मार्ग है। प्रकृति सिखाती है कि जीवन निरंतर गतिशील है और समयानुकूल परिवर्तन स्वीकार करके ही उसकी ताजगी तथा प्रगति बनी रहती है।

चरण 3: निष्कर्ष शरीष का संदेश है कि जीवन में नवीनता का स्वागत करना और पुराने के अनुचित मोह से मुक्त होना आवश्यक है।

त्वरित सुझाव: प्राकृतिक दृश्य का वर्णन करने के बाद उससे निकलने वाला परिवर्तन और नवीनता का संदेश अवश्य लिखिए।

10. रात्रि की विभीषिका को सिर्फ पहलवान की ढोलक ही ललकारकर चुनौती देती रहती थी। पहलवान संध्या से सुबह तक, चाहे जिस ख्याल से ढोलक बजाता हो, किंतु गाँव के अर्द्धमृत, औषधि-उपचार-पथ्य-विहीन प्राणियों में वह संजीवनी शक्ति ही भरती थी। बूढ़े-बच्चे-जवानों की शक्तिहीन आँखों के आगे दंगल का दृश्य नाचने लगता था। स्पंदन-शक्ति-शून्य स्नायुओं में भी बिजली दौड़ जाती थी। अवश्य ही ढोलक की आवाज़ में न तो बुखार हटाने का कोई गुण था और न महामारी की सर्वनाश शक्ति को रोकने की शक्ति ही, पर इसमें संदेह नहीं कि मरते हुए प्राणियों को आँख मूँदते समय कोई तकलीफ़ नहीं होती थी, मृत्यु से वे डरते नहीं थे। [5 अंक]

10(i). 'रात्रि की विभीषिका' से अभिप्राय है :

[1 अंक]

- (A) रात्रि का सन्नाटा
- (B) रात्रि का भयावहपन
- (C) रात्रि का अंधकार
- (D) रात्रि की स्पंदनहीनता

सही उत्तर: (B) रात्रि का भयावहपन

हल:

अवधारणा:

- प्रसंग के अनुसार शब्द का अर्थ उसके आसपास वर्णित वातावरण से निर्धारित होता है।
- विभीषिका का अर्थ भय उत्पन्न करने वाली स्थिति या भयावहता है।

चरण 1: प्रसंग से अर्थ पहचानिए गद्यांश में महामारी, शक्तिहीन प्राणियों और मृत्यु के भय का वातावरण है। ऐसी रात को ढोलक ललकारती है। इसलिए रात्रि की विभीषिका से रात का भयावहपन समझना चाहिए।

चरण 2: अन्य विकल्प जाँचिए (A) सन्नाटा केवल आवाज़ का अभाव है और (C) अंधकार केवल प्रकाश का अभाव। (D) स्पंदनहीनता गतिहीनता को बताती है। ये शब्द उस व्यापक भय और आतंक को पूर्ण रूप से व्यक्त नहीं करते जिसे विभीषिका कहा गया है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (B) है : रात्रि का भयावहपन।

त्वरित सुझाव: विभीषिका में निहित भय का भाव पहचानें और केवल रात की भौतिक स्थिति बताने वाले विकल्प हटा दें।

10(ii). रात्रि की विभीषिका को गाँव में कौन चुनौती देता था ?

[1 अंक]

- (A) जंगली जानवरों की आवाज़
- (B) रात्रि का सूनापन
- (C) पहलवान के लड़के
- (D) पहलवान की ढोलक

सही उत्तर: (D) पहलवान की ढोलक

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश-बोध में सीधे पूछी गई सूचना का उत्तर मूल वाक्य से मिलता है।
- चुनौती देने वाले साधन और उसे बजाने वाले व्यक्ति के बीच अंतर पहचानना आवश्यक है।

चरण 1: प्रत्यक्ष प्रमाण खोजिए गद्यांश का आरंभ कहता है कि रात्रि की विभीषिका को सिर्फ पहलवान की ढोलक ही ललकारकर चुनौती देती रहती थी। इससे चुनौती देने वाले के विषय में कोई संदेह नहीं रहता।

चरण 2: विकल्पों का मिलान कीजिए (A) जंगली जानवरों की आवाज़ का इस भूमिका में उल्लेख नहीं है। (B) रात्रि का सूनापन स्वयं भयपूर्ण वातावरण का अंग है। (C) पहलवान के लड़कों को यहाँ चुनौती देने वाला नहीं बताया गया है। केवल (D) मूल वाक्य से ठीक मेल खाता है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (D) है : पहलवान की ढोलक।

त्वरित सुझाव: ऐसे प्रत्यक्ष प्रश्न में गद्यांश के उसी वाक्य को खोजें जिसमें प्रश्न के मुख्य शब्द दोहराए गए हों।

10(iii). ढोलक की आवाज़ का गाँववालों पर पड़ने वाले प्रभाव के विषय में असत्य कथन है :

[1 अंक]

- (A) नसों में बिजली दौड़ जाती थी।
- (B) उनमें संजीवनी की शक्ति भरती थी।
- (C) मृत्यु का सामना करने की शक्ति देती थी।
- (D) मृत्यु को पराजित करने की ताकत देती थी।

सही उत्तर: (D) मृत्यु को पराजित करने की ताकत देती थी।

हल:

अवधारणा:

- असत्य कथन चुनते समय गद्यांश से समर्थित कथनों को पहले अलग करें।
- मनोबल देना और रोग अथवा मृत्यु को वास्तव में रोक देना अलग-अलग प्रभाव हैं।

चरण 1: बताए गए प्रभाव पहचानिए गद्यांश में ढोलक संजीवनी शक्ति भरती है, शक्तिहीन स्नायुओं में बिजली दौड़ा देती है और मृत्यु का भय घटाती है। इसलिए (A), (B) और (C) गद्यांश के भाव के अनुरूप सत्य कथन हैं।

चरण 2: सीमा स्पष्ट कीजिए लेखक स्पष्ट कहते हैं कि ढोलक में बुखार हटाने या महामारी की सर्वनाश शक्ति रोकने की शक्ति नहीं थी। मरते लोग उससे निर्भय होते थे, अमर नहीं। इसलिए मृत्यु को पराजित करने की वास्तविक ताकत देने वाला कथन गद्यांश के विरुद्ध है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (D) है : मृत्यु को पराजित करने की ताकत देती थी। यह असत्य कथन है।

त्वरित सुझाव: असत्य पूछे जाने पर ढोलक के मानसिक प्रभाव को रोग और मृत्यु रोकने की वास्तविक क्षमता से अलग रखें।

10(iv). गद्यांश के अनुसार गाँववालों की दीन-हीन स्थिति का प्रमुख कारण था :

[1 अंक]

- (A) निर्धनता
- (B) अतिवृष्टि
- (C) संक्रामक रोग
- (D) साधनहीनता

सही उत्तर: (C) संक्रामक रोग

हल:

अवधारणा:

- प्रमुख कारण पहचानते समय केंद्रीय संकट और उसे बढ़ाने वाली परिस्थितियों में अंतर करें।
- बुखार, महामारी और मृत्यु का उल्लेख संक्रामक रोग के प्रकोप को स्पष्ट करता है।

चरण 1: गद्यांश के संकेत जोड़िए गाँववाले अर्द्धमृत हैं; बुखार और महामारी की सर्वनाश शक्ति का स्पष्ट उल्लेख है। यही व्यापक रोग-प्रकोप गाँववालों की दीन-हीन दशा का प्रमुख कारण है। इसलिए संक्रामक रोग वाला विकल्प सबसे उपयुक्त है।

चरण 2: अन्य कारणों से अंतर समझिए (A) निर्धनता तथा (D) साधनहीनता उपचार के अभाव से जुड़ी परिस्थितियाँ हैं, लेकिन यहाँ मुख्य विनाशकारी संकट महामारी है। (B) अतिवृष्टि का इस गद्यांश में उल्लेख नहीं है। इन कारणों को महामारी के स्पष्ट पाठगत प्रमाण से ऊपर नहीं रखा जा सकता।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (C) है : संक्रामक रोग।

त्वरित सुझाव: प्रमुख कारण के लिए बुखार और महामारी जैसे प्रत्यक्ष संकेत चुनें; उपचार के अभाव को मूल रोग से अलग रखें।

10(v). 'बिजली दौड़ जाती थी' – का आशय है :

[1 अंक]

- (A) वायु का प्रवाह होने लगता था
- (B) रक्त का संचार होने लगता था
- (C) बिजली का प्रवाह होने लगता था
- (D) चेतना का संचार हो जाता था

सही उत्तर: (D) चेतना का संचार हो जाता था

हल:

अवधारणा:

- साहित्यिक भाषा में बिजली दौड़ना अचानक ऊर्जा, उत्साह और चेतना आने का संकेत है।
- भावार्थ चुनते समय मुहावरे को शाब्दिक या शरीर-विज्ञान संबंधी कथन नहीं मानना चाहिए।

चरण 1: प्रसंग में भाव समझिए ढोलक सुनकर शक्तिहीन आँखों के सामने दंगल का दृश्य उभरता है और निष्प्राण-से स्नायुओं में स्पंदन आता है। यहाँ बिजली दौड़ना चेतना, उत्साह और मनोबल के अचानक संचार का चित्र है।

चरण 2: भ्रामक विकल्प हटाइए (A) वायु का प्रवाह और (C) वास्तविक बिजली का प्रवाह प्रसंग से असंबद्ध शाब्दिक अर्थ हैं। (B) रक्त-संचार शरीर की एक क्रिया है; लेखक उस शारीरिक प्रक्रिया का चिकित्सकीय विवरण नहीं दे रहे। अतः भावार्थ को ठीक व्यक्त करने वाला विकल्प (D) है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (D) है : चेतना का संचार हो जाता था।

त्वरित सुझाव: बिजली दौड़ने जैसे प्रयोग में वास्तविक विद्युत के बजाय प्रसंग से उत्पन्न उत्साह और चेतना का भाव खोजें।

11(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

‘काले मेघा पानी दे’ पाठ में मेंढक मंडली पर पानी फेंके जाने को ‘पानी की बुवाई’ कहा गया है। इस विषय में आपकी क्या राय है ? स्पष्ट कीजिए।

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पाठ में पानी की बुवाई का रूपक बीज बोने और उसके बदले अधिक उपज मिलने की धारणा पर आधारित है।
- उत्तर में जीजी के विश्वास का अर्थ समझाकर अपनी विवेकपूर्ण राय देनी है।

चरण 1: रूपक का संदर्भ समझें जीजी मानती हैं कि जैसे किसान कुछ बीज धरती को देकर अधिक अन्न पाता है, वैसे ही मेंढक मंडली पर पानी डालना वर्षा के लिए किया गया त्याग है। इस लोकविश्वास में दान तथा सामूहिक मंगल की कामना निहित है। लेखक का आरंभिक विरोध पानी की कमी के बीच उसके व्यय को लेकर है; इसीलिए राय में आस्था और तर्क, दोनों पक्षों का ध्यान आवश्यक है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर मेरे विचार में ‘पानी की बुवाई’ त्याग और लोककल्याण का प्रतीक है। जीजी इसे बीज बोने की तरह अधिक वर्षा पाने का साधन मानती हैं। इसकी सामुदायिक भावना सुंदर है, किंतु पानी फेंकने से वर्षा होने का वैज्ञानिक आधार नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष इस रूपक का सांस्कृतिक अर्थ त्याग है; वर्षा के कारण के रूप में इसे वैज्ञानिक सत्य नहीं मानना चाहिए।

त्वरित सुझाव: अपनी राय देते समय लोकविश्वास का अर्थ और जल-संरक्षण का विवेक साथ रखें।

11(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

‘भक्तिन’ पाठ में महादेवी जी ने भक्तिन और अपने संबंधों की तुलना किससे और क्यों की है ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- महादेवी वर्मा का संस्मरण सेवा से विकसित आत्मीयता और भक्तिन के स्वतंत्र व्यक्तित्व को उभारता है।
- घर के प्राकृतिक अंगों की उपमा संबंध की सहजता तथा अनिवार्यता को स्पष्ट करती है।

चरण 1: पाठ की उपमा पहचानें लेखिका घर में आने-जाने वाले अँधेरे-उजाले और आँगन में फूलने वाले गुलाब तथा आम का उदाहरण देती हैं। इन्हें सेवक कहना जितना असंगत है, भक्तिन को केवल नौकर मानना भी उतना ही असंगत है। वह परिवार और जीवन का अभिन्न अंग है। उसका अपना स्वतंत्र अस्तित्व भी है; वह केवल आदेश पालन करने वाली आश्रित सेविका नहीं है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर महादेवी जी ने भक्तिन की स्थिति की तुलना घर के अँधेरे-उजाले तथा आँगन के गुलाब और आम से की है। जैसे ये घर के स्वाभाविक अंग हैं, वैसे ही भक्तिन उनके जीवन का आत्मीय, अभिन्न अंग है; संबंध केवल सेविका-स्वामिनी का नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष यह उपमा दोनों के बीच सहज अपनापन, अविभाज्यता और साधारण नौकरी से ऊपर उठी आत्मीयता व्यक्त करती है।

त्वरित सुझाव: तुलना के प्रश्न में उपमानों के नाम लिखकर उनके और संबंध के बीच समानता स्पष्ट करें।

11(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

‘श्रम विभाजन और जाति प्रथा’ पाठ के आधार पर लेखक के ‘समता’ संबंधी विचारों की व्याख्या कीजिए।

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आंबेडकर प्राकृतिक भिन्नताओं के होते हुए भी मनुष्यों के साथ समान व्यवहार का समर्थन करते हैं।
- वंश, सामाजिक परिवेश और व्यक्तिगत प्रयत्न की भिन्नताएँ जन्माधारित विशेषाधिकार का औचित्य नहीं बनतीं।

चरण 1: समता का आशय समझें लेखक समता को प्रत्येक व्यक्ति की क्षमता एक जैसी होने का दावा नहीं मानते। सामाजिक विरासत और अवसरों की असमानता व्यक्ति की उपलब्धि को प्रभावित करती है। इसलिए जन्म और जाति के कारण किसी को आगे बढ़ने से रोकना अनुचित है। समान अवसर मिलने पर योग्यता विकसित हो सकती है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर लेखक के अनुसार मनुष्य जन्म, सामाजिक विरासत और प्रयत्नों में असमान हो सकते हैं, फिर भी सबको समान व्यवहार तथा विकास के अवसर मिलने चाहिए। जन्म और जाति पर आधारित भेदभाव अनुचित है। समता सामाजिक न्याय की आवश्यक नीति और आदर्श समाज का आधार है।

चरण 3: निष्कर्ष समता का लक्ष्य जन्मगत विशेषाधिकार मिटाकर सभी को अपनी क्षमता विकसित करने का अवसर देना है।

त्वरित सुझाव: समता को समान क्षमता न कहें; समान व्यवहार और विकास के अवसरों से उसका अर्थ स्पष्ट करें।

12(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में लिखिए :

यशोधर बाबू एक ओर अपने बच्चों की तरक्की से खुश भी होते हैं तो दूसरी ओर उन्हें उनकी यह तरक्की 'समहाउ इंप्रापर' भी लगती है। उनके व्यवहार के इस विरोधाभास को 'सिल्वर वैडिंग' कहानी के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

[5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यशोधर बाबू का चरित्र परंपरागत संस्कारों और परिवार की आधुनिक जीवनदृष्टि के बीच के द्वंद्व को सामने लाता है। उनकी प्रसन्नता और असहजता के कारण अलग-अलग समझने चाहिए।
- उत्तर में बच्चों की आर्थिक तथा शैक्षिक प्रगति के साथ सादगी, पारिवारिक आत्मीयता और बुजुर्गों के सम्मान जैसी उनकी अपेक्षाओं का संबंध स्पष्ट करना आवश्यक है।

चरण 1: प्रसन्नता का आधार पहचानना एक पिता के रूप में यशोधर बाबू बच्चों को आगे बढ़ते देखकर संतोष अनुभव करते हैं। भूषण की अच्छी नौकरी और अधिक वेतन उसके सक्षम होने का प्रमाण हैं। दूसरे बच्चों की महत्वाकांक्षाएँ भी नई पीढ़ी के लिए खुलते अवसरों को व्यक्त करती हैं। अतः उनकी खुशी स्वाभाविक पितृस्नेह से जुड़ी है; उन्हें बच्चों की असफलता नहीं चाहिए।

चरण 2: असहजता का कारण समझना किशनदा के सान्निध्य और पुराने जीवनानुभवों ने उनमें सादगी तथा सामूहिकता के संस्कार विकसित किए हैं। बच्चों का उपभोगप्रधान व्यवहार, उनकी सलाह की उपेक्षा और जन्मदिन अथवा विवाह की वर्षगाँठ मनाने का नया ढंग उन्हें अपरिचित लगता है। इसलिए उत्तर में उनकी मनःस्थिति को केवल ईर्ष्या कहना अनुचित होगा।

चरण 3: लगभग 100 शब्दों में आदर्श उत्तर यशोधर बाबू बच्चों की सफलता से प्रसन्न हैं, क्योंकि उनकी उन्नति पिता के लिए गर्व का विषय है। भूषण की अच्छी नौकरी और ऊँचा वेतन उन्हें संतोष देते हैं। किंतु किशनदा के संस्कारों में पले यशोधर बाबू सादगी, आत्मीयता और परंपरागत मूल्यों को महत्त्व देते हैं। बच्चों की आधुनिक जीवनशैली, खर्चीली दावत और उनकी सलाह के प्रति उपेक्षा उन्हें खटकती है। परिवार उनकी भावनाओं से दूर होता दिखाई देता है। इसीलिए वही तरक्की उन्हें 'समहाउ इंप्रापर' लगती है। उनका विरोधाभास बच्चों से ईर्ष्या नहीं, बल्कि पितृस्नेह और बदलते पारिवारिक मूल्यों के बीच उत्पन्न मानसिक द्वंद्व है।

चरण 4: निष्कर्ष यशोधर बाबू बच्चों की उपलब्धियों से खुश हैं, पर उपलब्धियों के साथ बढ़ती मूल्यगत और भावनात्मक दूरी को स्वीकार नहीं कर पाते। इसी से उनके व्यवहार का विरोधाभास पैदा होता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले पिता की खुशी का कारण और फिर पुराने संस्कारों से आधुनिक व्यवहार की टकराहट लिखें; दोनों को जोड़कर ही विरोधाभास स्पष्ट होगा।

12(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में लिखिए :

स्कूल जाने के लिए बेचैन आनंदा के साथ स्कूल में ऐसा क्या घटित हुआ कि वह स्कूल नहीं जाने की बात सोचने लगा ? 'जूझ' कहानी के आधार पर लिखिए।

[5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- 'जूझ' में आनंदा का संघर्ष शिक्षा प्राप्त करने की तीव्र इच्छा और उसके मार्ग में आने वाली घरेलू तथा सामाजिक बाधाओं से संबंधित है। यहाँ विद्यालय में अनुभव किए गए अपमान का प्रभाव स्पष्ट करना है।
- उत्तर का केंद्र सहपाठियों का उपहास और उससे आहत बालमन है। खेत के श्रम या पिता के विरोध का विस्तार इस विशेष प्रसंग के उत्तर का स्थान नहीं ले सकता।

चरण 1: आनंदा की आरंभिक उत्सुकता स्पष्ट करना आनंदा खेती के काम के बीच छूटी पढ़ाई फिर शुरू करना चाहता था। उसके लिए विद्यालय जाना विकास का अवसर और मन की बड़ी इच्छा थी। इसलिए स्कूल पहुँचने पर उसे अपनापन और पढ़ने का अवसर मिलने की अपेक्षा थी। यह पृष्ठभूमि उसके बाद उत्पन्न निराशा को समझने के लिए आवश्यक है।

चरण 2: विद्यालय के अनुभव का प्रभाव बताना विद्यालय में उसकी ग्रामीण वेशभूषा उपहास का कारण बन गई। दूसरे बच्चे नए कपड़ों में थे, जबकि वह मैली धोती और सिर पर गमछा बाँधकर आया था। शरारती चढ़ाण ने उसे विशेष रूप से परेशान किया। गमछे को लेकर हुई छेड़छाड़ और बच्चों की हँसी ने उसे शर्मिंदा तथा अकेला अनुभव कराया। पढ़ाई की उत्सुकता तत्काल अपमान के भय से दब गई।

चरण 3: लगभग 100 शब्दों में आदर्श उत्तर आनंदा बहुत उत्साह से दोबारा स्कूल गया था, लेकिन वहाँ उसकी वेशभूषा का मजाक उड़ाया गया। वह मैली धोती और सिर पर गमछा बाँधकर पहुँचा था, जबकि दूसरे लड़के अलग ढंग के कपड़े पहने थे। शरारती लड़के चढ़ाण ने उसके गमछे को लेकर उसे परेशान किया और सहपाठी हँसने लगे। इस व्यवहार से आनंदा को गहरा अपमान और संकोच अनुभव हुआ। जिस विद्यालय में वह पढ़ने और आगे बढ़ने की आशा लेकर आया था, वहीं उपहास का पात्र बन गया। इसीलिए पढ़ाई की तीव्र इच्छा के बावजूद वह स्कूल न जाने की बात सोचने लगा।

चरण 4: निष्कर्ष आनंदा की निराशा का तत्काल कारण पढ़ाई में अरुचि नहीं, बल्कि विद्यालय में वेशभूषा के कारण हुआ उपहास और अपमान था। इससे उसकी शिक्षा पाने की उत्सुकता को चोट पहुँची।

त्वरित सुझाव: प्रसंग के उत्तर में क्रम रखें: स्कूल जाने का उत्साह, वेशभूषा पर उपहास, चढ़ाण की शरारत और अपमान से पैदा हुई स्कूल छोड़ने की इच्छा।

12(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में लिखिए :

“सिंधु घाटी सभ्यता को दूसरी सभ्यताओं से अलग करने वाली इसकी सबसे बड़ी विशेषता है – प्रभुत्व या दिखावे के तेवर का नदारद होना।” पाठ के आधार पर इसकी पुष्टि कीजिए।

[5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- ओम थानवी का यात्रा-वृत्तांत सिंधु सभ्यता की पहचान उसके नगर-नियोजन, सामुदायिक सुविधाओं और सुघड़ कला-बोध में खोजता है।
- प्रभुत्व का अभाव समझाने के लिए राजसी वैभव के स्मारकों के स्थान पर सामान्य नागरिक के जीवन और उपयोगी कलात्मक वस्तुओं के प्रमाण देने चाहिए।

चरण 1: कथन की पुष्टि करने वाले प्रमाण चुनिए पाठ में मोहनजोदड़ो के अवशेषों का महत्त्व केवल उनके प्राचीन होने में नहीं है। वहाँ व्यवस्थित सड़कें, जल-निकासी, कुएँ और स्नानागार जैसी सुविधाएँ नागरिक जीवन के प्रति सजग दृष्टि प्रकट करती हैं। दूसरी ओर भव्य राजप्रासाद, विराट मंदिर और राजाओं की शक्ति का बखान करने वाले स्मारक नहीं मिलते। इससे यह समझ बनती है कि सभ्यता की उपलब्धियों का केंद्र किसी शासक की महिमा के प्रदर्शन के बजाय नगर और उसके निवासी थे। उत्तर में इसी अंतर को स्पष्ट करना आवश्यक है।

चरण 2: कला-बोध को दैनिक जीवन से जोड़िए छोटे आकार की मूर्तियाँ, मुहरें, आभूषण और सुंदर उपयोगी वस्तुएँ कलात्मक रुचि के प्रमाण हैं। उनकी सुघड़ता बताती है कि सौंदर्य के लिए विशाल आकार और तड़क-भड़क अनिवार्य नहीं थे। यहाँ “दिखावे का अभाव” कहने का अर्थ कला या समृद्धि का अभाव नहीं, बल्कि उनके संयत और जीवनोपयोगी रूप से है। पुरातात्विक अवशेषों के आधार पर बात रखनी चाहिए; शासकों के विषय में कोई मनगढ़ंत घटना नहीं जोड़नी चाहिए।

चरण 3: लगभग 100 शब्दों में आदर्श उत्तर सिंधु घाटी सभ्यता की विशेषता उसकी सादगी और नागरिक जीवन के प्रति सजगता है। मोहनजोदड़ो में भव्य राजमहलों, विराट मंदिरों अथवा राजाओं की विजय का प्रदर्शन करने वाले स्मारकों के स्थान पर सुनियोजित सड़कें, नालियाँ, कुएँ और सार्वजनिक स्नानागार मिलते हैं। ये सुविधाएँ सामान्य नागरिक की आवश्यकताओं को महत्त्व देती हैं। वहाँ की छोटी मूर्तियाँ, मुहरें, आभूषण और उपयोगी वस्तुएँ सुघड़ कला-बोध प्रकट करती हैं, किंतु उनमें विशालता द्वारा आतंकित करने की प्रवृत्ति नहीं दिखती। इस प्रकार उसका सौंदर्य दैनिक जीवन में समाया था। शक्ति के प्रदर्शन के बजाय सामुदायिक सुविधा और संयमित सौंदर्य-बोध उसे दूसरी सभ्यताओं से अलग करते हैं।

चरण 4: निष्कर्ष सिंधु सभ्यता का वैशिष्ट्य नागरिक सुविधाओं तथा दैनिक जीवन में समाए सुघड़ सौंदर्य-बोध में है। उसमें राजसी प्रभुत्व

या भव्यता के प्रदर्शन की अपेक्षा जीवन की सुव्यवस्था प्रमुख है।

त्वरित सुझाव: कथन की पुष्टि में नगर-नियोजन का एक प्रमाण और छोटी कलात्मक वस्तुओं का एक प्रमाण देकर दोनों को दिखावे के अभाव से जोड़िए।